CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गद्य तरंग

केरल विश्वविद्यालय प्रकाशन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गद्य तरंग

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(HINDI)
GADHYA TARANG
Prose Collection

Compiled by a
Committee appointed by
University of Kerala

Type set at
Sangeetha Offset Printers
Kannammoola, Tvpm - 11
Phone : 443301

Printed at
University Press

First Edition 1997
Second Edition 1998
Third Edition 1999

Published by
Dr. A. Razaludeen
Director, Dept. of Publications
for the University of Kerala
Thiruvananthapuram

KUDP/S.No-35/TB(P)H/Ed-III/99/17-10

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गद्य तरंग

(प्री-डिग्री के लिए)

प्रकाशन विभाग
केरल विश्व विद्यालय
तिरुवनन्तपुरम
1999

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

EDITORIAL BOARD

Prof. R. Raveendran Nair (Convenor)

Prof. C.P. Jayasagar

Prof. Janet

Prof. Darly George

Dr. Sundararajan (Chairman)

Publication Officer C.S. Suchit

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी ओर से

गद्य तरंग हिंदी गद्य की विविध विधाओं का संकलन है जो प्री-डिग्री के छात्रों के लिए तैयार किया गया है। छात्रों में सामाजिक, नैतिक, साहित्यिक, एवं वैज्ञानिक भावसंचरण करने में यह संकलन समर्थ रहेगा। आशा है कि गद्य तरंग का स्पर्श पाकर छात्रों के दिल और दिमाग पुलकित होंगे। जिन लेखकों तथा प्रकाशकों ने अपनी रचनाओं को गद्य तरंग में संकलित करने की अनुमति दी है उनको केरल विश्वविद्यालय के प्रकाशन विभाग की ओर से धन्यवाद। नए भाव और नई कल्पना के साथ कॉलेजों में आनेवाले छात्रों को विश्वविद्यालय की ओर से शुभकामनायें।

तिरुवनन्तपुरम,
1-6-1997

प्रो.आर.रवीन्द्रन नायर
(संयोजक)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय सूची

1. संस्कृति है क्या?
रामधारी सिंह दिनकर 9
2. अहिंसा का पाठ
विजयेन्द्र स्नातक 17
3. शिवजी की बारात
विद्यानिवास मिश्र 23
4. राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी
गजानन माधव मुक्तिबोध 32
5. हमारी वेश भूषा
रवीन्द्रनाथ त्यागी 39
6. नवीन सामाजिक व्यवस्था
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 46
7. जेल में विवाह
यशपाल 52
8. भक्त त्यागराज
श्री. राजेन्द्र सिंह गौड़ 60
9. बढ़ते शोर का गहराता संकट
राजेन्द्रकुमार राय
रवीन्द्रकुमार वर्मा 68

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संस्कृति है क्या?

रामधारी सिंह दिनकर

(ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित दिनकर हिंदी के वरिष्ठ कवि हैं। `उर्वशी' उनका सर्वोत्तम काव्य है। `कुरुक्षेत्र' `रश्मिरथी' आदि उनके अन्य काव्य हैं। कविता के समान ही उनका गद्य भी प्रौढ़ है। साहित्य, संस्कृति, शिक्षा आदि विषयों पर उन्होंने अनेक गद्य लेख लिखे हैं। `संस्कृति के चार अध्याय' उनकी प्रसिद्ध रचना है। भारतीय संस्कृति के चार सोपानों का विवेचन ही उस ग्रंथ का विषय है। दिनकर ने इस पुस्तक में यह सिद्ध किया है कि भारत की संस्कृति मूलत: सामाजिक है।

`संस्कृति है क्या?' शीर्षक निबंध `संस्कृति के चार अध्याय' के अंत में परिशिष्ट के रूप में दिया गया है। इसमें विद्वान लेखक ने संस्कृति का स्वरूप समझाते हुए संस्कृति और सभ्यता के अंतर को बड़ी सूक्ष्मता से समझाया है। आदान-प्रदान की प्रक्रिया संस्कृति की जान है और वह इसी के सहारे अपने को ज़िंदा रखती है। इस बात को लेखक ने भारतीय संस्कृति के इतिहास के उदाहरणों से समझाया है।)

संस्कृति ऐसी चीज़ है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किंतु, उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। कुछ अंशों में वह सभ्यता से भिन्न गुण है। अंग्रेज़ी में कहावत है कि सभ्यता वह चीज़ है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो इसमें व्याप्त है। मोटर, महल, सड़क, हवाई जहाज़, पोशाक और अच्छा भोजन ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएँ, संस्कृति की चीज़ है। इसी प्रकार, मोटर बनाने और उसका उपयोग करने, महलों के निर्माण में रुचि का परिचय देने और सड़कों तथा हवाई जहाज़ों की रचना में जो ज्ञान लगता है, उसे अर्जित करने में संस्कृति अपने को व्यक्त करती है। हर सुसभ्य आदमी सुसंस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्योंकि अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तवीयत से नंगा हो सकता है और तवीयत से नंगा होना संस्कृति के ख़िलाफ़ वात है। और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हर सुसंस्कृत आदमी सभ्य भी होता है, क्योंकि सभ्यता की पहचान सुख-सुविधा और ठाट-वाट है। मगर, वहुत से ऐसे लोग हैं जो सड़े गले झोपड़ों में रहते हैं, जिनके पास काफ़ी कपड़े भी नहीं होते और न कपड़े पहनने के अच्छे ढंग ही उन्हें मालूम होते हैं, लेकिन फिर भी उनमें विनय और सदाचार होता है, वे दूसरों के दुःख से दुःखी होते हैं तथा दूसरों का दुःख दूर करने केलिए वे खुद मुसीबत उठाने को भी तैयार रहते हैं।

छोटा नागपुर की आदिवासी जनता पूर्णरूप से सभ्य तो नहीं कही जा सकती क्योंकि सभ्यता के वड़े-वड़े उपकरण उसके पास नहीं है, लेकिन दया, माया, सचाई और सदाचार उसमें कम नहीं है। अतएव, उसे सुसंस्कृत समझने में कोई उज्र नहीं होना चाहिए। प्राचीन भारत में ऋपिगण जंगलों में रहते थे और जंगलों में वे कोठे और महल वनाकर नहीं रहते थे। फूस की झोपड़ियों में वास करना, जंगल के जीवों से दोस्ती और प्यार करना, किसी भी मोटे काम को अपने हाथ से करने में हिचकिचाहट नहीं दिखाना, पत्तों में खाना और मिट्टी के वर्तनों में रसोई पकाना, यही उनकी ज़िन्दगी थी। और ये लक्षण आज की यूरोपीय परिभापा के अनुसार सभ्यता के लक्षण नहीं माने जाते हैं। फिर भी वे ऋपिगण सुसंस्कृत ही नहीं थे, वल्कि, वे हमारी जाति की संस्कृति का निर्माण करते थे। सभ्यता और संस्कृति में यह एक मौलिक भेद है जिसे समझे विना हमें कहीं- कहीं कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगर, यह कठिनाई कहीं-कहीं ही आती है। साधारण नियम यही है कि संस्कृति और सभ्यता की प्रगति अधिकतर, एक साथ होती है और दोनों का एक दूसरे पर प्रभाव भी पड़ता रहता है। उदाहरण के लिए, हम जब कोई घर बनाने लगते है, तब, स्थूलरूप से यह सभ्यता का कार्य होता है। मगर, हम घर का कौन-सा नक्शा पसन्द करते हैं, इसका निर्णय हमारी सांस्कृतिक रुचि करती है। और संस्कृति की प्रेरणा से हम जैसा घर बनाते हैं, वह फिर हमारी सभ्यता का अंग बन जाता है। इस प्रकार, सभ्यता का संस्कृति पर और संस्कृति का सभ्यता पर पड़नेवाले प्रभाव का क्रम निरन्तर चलता ही रहता है।

यहीं एक यह बात भी समझ लेनी चाहिए कि संस्कृति और प्रकृति में भी भेद है। गुस्सा करना मनुष्य की प्रकृति है, लोभ में पड़ना उसका स्वभाव है, ईर्ष्या, मोह, राग, द्वेष, और कामवासना, ये सब के सब प्रकृति-दत्त गुण हैं। मगर, प्रकृति के ये गुण अगर बेरोक छोड़ दिये जाएं तो आदमी और जानवर में कोई भेद नहीं रह जाय। इसलिए, मनुष्य प्रकृति के इन आवेगों पर रोक लगाता है और कोशिश करता है कि वह गुस्से के वस में नहीं, बल्कि, गुस्सा ही उसके वस में रहे, वह लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष और कामवासना का गुलाम नहीं, बल्कि, ये दुर्गुण ही उसके गुलाम रहें। और इन दुर्गुणों पर आदमी जितना विजयी होता है, उसकी संस्कृति भी उतनी ही ऊँची समझी जाती है।

निष्कर्ष यह कि संस्कृति सभ्यता की अपेक्षा महीन चीज़ होती है। यह सभ्यता के भीतर उसी तरह व्याप्त रहती है जैसे दूध में मक्खन या फूलों में सुगन्ध। और सभ्यता की अपेक्षा यह टिकाऊ भी अधिक है, क्योंकि सभ्यता की सामग्रियाँ टूट-फूटकर विनष्ट हो सकती है, लेकिन, संस्कृति का विनाश उतनी आसानी से नहीं किया जा सकता।

एक बात और है कि सभ्यता के उपकरण जल्दी से बटोरे भी जा सकते हैं, मगर, उनके उपयोग केलिए जो उपयुक्त संस्कृति चाहिए वह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुरन्त नहीं आ सकती। जो आदमी अचानक धनी हो जाता है या एक-व-एक किसी ऊँचे पद पर पहुँच जाता है उसे चिढ़ाने के लिए अंगरेजी में एक शब्द 'अपस्टार्ट' है। 'अपस्टार्ट' को लोग बुरा समझते हैं और इसलिए नहीं बुरा समझते हैं कि अचानक धनी हो जाना या एक-व-एक ऊँचे पद पर पहुँच जाना कोई बुरी बात है, मगर, इसलिए कि धनियों तथा ऊँचे ओहदेवालों की जो संस्कृति है वह तुरन्त सीखी नहीं जा सकती। इसलिए, ऊँचे ओहदे पर पहुँचा हुआ व्यक्ति यदि पहले से अधिक विनयशील नहीं हो जाय तो वह चिढ़ाने लायक हो जाता है।

संस्कृति ऐसी चीज़ नहीं कि जिसकी रचना दस-बीस या सौ-पचास वर्षों में की जा सकती हो। अनेक शताब्दियों तक एक समाज के लोग जिस तरह खाते-पीते, रहते-सहते, पढ़ते-लिखते, सोचते-समझते और राज-काज चलाते अथवा धर्म-कर्म करते हैं, उन सभी कार्यों में उनकी संस्कृति की झलक होती है। यहाँ तक कि हमारे उठने-बैठने, पहनने-ओढ़ने, घूमने-फिरने और रोने-हँसने में भी हमारी संस्कृति की पहचान होती है, यद्यपि हमारा कोई भी एक काम हमारी संस्कृति का पर्याय नहीं बन सकता। असल में, संस्कृति जिन्दगी का एक तरीका है और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता है जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए, जिस समाज में हम पैदा हुए हैं, अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं वह भी हमारी संस्कृति है, यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा करते हैं वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाता है और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं। इसलिए, संस्कृति वह चीज़ मानी जाती है जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुए है तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के अनुभवों का हाथ है। यही नहीं, बल्कि, संस्कृति हमारा पीछा जन्म - जन्मान्तर तक करती है। अपने यहाँ एक साधारण कहावत है कि जिसका जैसा संस्कार है, उसका वैसा ही पुनर्जन्म भी होता है। जब हम किसी बालक या बालिका को बहुत तेज़ पाते हैं तब हम अचानक कह उठते हैं कि यह पूर्वजन्म का संस्कार है। संस्कार या संस्कृति, असल में शरीर का नहीं, आत्मा का गुण है और जबकि सभ्यता की सामग्रियों से हमारा संबन्ध शरीर के साथ ही छूट जाता है, तब भी हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारी आत्मा के साथ जन्म-जन्मान्तर तक चलता रहता है।

आदिकाल से हमारे लिए जो लोक - काव्य और दर्शन रचते आये हैं, चित्र और मूर्ति बनाते आये हैं, वे हमारी संस्कृति के रचयिता हैं। आदिकाल से हम जिस जिस रूप में शासन चलाते आये हैं, पूजा करते आये हैं, मन्दिर और मकान बनाते आये हैं, नाटक और अभिनय करते आये हैं, बरतन और घर के दूसरे सामान बनाते आये हैं, कपड़े और ज़ेवर पहनते आये हैं, शादी और श्राद्ध करते आये हैं, पर्व और त्योहार मनाते आये हैं अथवा परिवार, पड़ोसी और संसार से दोस्ती या दुश्मनी का जो भी सलूक करते आये हैं, वह सब-का-सब हमारी संस्कृति का ही अंश है। संस्कृति के उपकरण हमारे पुस्तकालय और संग्रहालय (म्युज़ियम), नाटकशाला और सिनेमागृह ही नहीं, बल्कि, हमारे राजनीतिक और आर्थिक संगठन भी होते हैं, क्योंकि उनपर भी हमारी रुचि और चरित्र की छाप लगी होती है।

संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढ़ती है। जब कि दो देश वाणिज्य-व्यापार अथवा शत्रुता या मित्रता के कारण आपस में मिलते है तब उनकी संस्कृतियाँ एक दूसरे को प्रभावित करने लगती हैं,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठीक उसी प्रकार, जैसे दो व्यक्तियों की संगति का प्रभाव दोनों पर पड़ता है। संसार में शायद ही ऐसा कोई देश हो जो यह दावा कर सके कि उस पर किसी अन्य देश की संस्कृति का प्रभाव नहीं पड़ा है। इसी प्रकार, कोई जाति भी यह नहीं कह सकती कि उस पर किसी दूसरी जाति का प्रभाव नहीं है।

जो जाति केवल देना ही जानती है, लेना कुछ नहीं, उसकी संस्कृति का एक-न एक दिन दिवाला निकल जाता है। उसके विपरीत, जिस जलाशय के पानी लाने वाले दरवाजे बराबर खुले रहते हैं, उसकी संस्कृति कभी नहीं सूखती। उसमें सदा ही स्वच्छ जल लहराता रहता है और कमल के फूल खिलते रहते हैं। कूपमण्डूकता और दुनिया से रूठ कर अलग बैठने का भाव संस्कृति को ले डूबता है। अक्सर देखा जाता है कि जब हम एक भाषा में किसी अद्‌भुत कला को विकसित होते देखते हैं तब तुरन्त पास-पड़ोस या सम्पर्कवाली दूसरी भाषा में हम उसके उत्स की खोज करने लगते हैं। पहले एक भाषा में `शेली' और `कीट्स' पैदा होते हैं, तब दूसरी भाषा में रवीन्द्र उत्पन्न होते हैं। पहले एक देश में बुद्ध पैदा होते है, तब दूसरे देश में ईसामसीह का जन्म होता हैं। अगर मुसलमान इस देश में नहीं आये होते तो उर्दू भाषा का जन्म नहीं होता, और न मोहल-कलम की चित्रकारी ही यहाँ पैदा हुई होती। अगर युरोप से भारत का सम्पर्क नहीं हुआ होता तो भारत की विचारधारा पर विज्ञान का प्रभाव देर से पड़ता और राममोहनराय, दयानन्द, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द और गाँधी में से कोई भी सुधारक उस समय जन्म नहीं लेते जिस समय उनका जन्म हुआ। जब भी दो जातियाँ मिलती हैं, उनके सम्पर्क या संघर्ष से ज़िन्दगी की एक नई धारा फूट निकलती है जिसका प्रभाव दोनों पर पड़ता है। आदान प्रदान की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रक्रिया संस्कृति की जान है और इसी के सहारे वह अपने को ज़िन्दा रखती है।

केवल चित्र, कविता, मूर्ति, मकान और पोशाक पर ही नहीं, सांस्कृतिक सम्पर्क का प्रभाव दर्शन और विचार पर भी पड़ता है। एक देश में जो दार्शनिक और महात्मा उत्पन्न होते हैं, उनकी आवाज़ दूसरे देशों में भी मिलते-जुलते दार्शनिकों और महात्माओं को जन्म देती है। एक देश में जो धर्म खड़ा होता है, वह दूसरे देशों के धर्मों को भी बहुत-कुछ बदल देता है। यही नहीं, बल्कि, प्राचीन जगत में तो बहुत से ऐसे देवी-देवता भी मिलते हैं जो कई जातियों के संस्कारों से निकल कर एक जगह जमा हुए हैं। एक जाति का धार्मिक रिवाज़ दूसरी जाति का रिवाज़ बन जाता है और एक देश की आदत दूसरे देश के लोगों की आदत में समा जाती है। अतएव, सांस्कृतिक दृष्टि से वह देश और वह जाति अधिक शक्तिशालिनी और महान् समझी जानी चाहिए जिसने विश्व के अधिक-से-अधिक देशों, अधिक-से-अधिक जातियों की संस्कृतियों को अपने भीतर जज़्ब करके, उन्हें पचा करके, बड़े-से बड़े समन्वय को उत्पन्न किया है। भारत देश और भारतीय जाति इस दृष्टि से संसार में सबसे महान् है क्योंकि यहाँ की सामाजिक संस्कृति में अधिक-से-अधिक जातियों की संस्कृतियाँ पची हुई हैं।

कठिन शब्दार्थ

ओहदा - बड़ा पद अथवा स्थान, दावा-claim दृढ़ता से कोई बात कहना, सामाजिक - composite, सम्मिलित - जिसमें अनेक मिलकर एक हुआ हो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1. यह सभ्यता के भीतर उसी तरह व्याप्त रहती है जैसे दूध में मक्खन या फूलों में सुगन्ध।

2. संस्कृति का स्वभाव है कि वह आदान-प्रदान से बढती है। जब कि दो देश वाणिज्य-व्यापार अथवा शत्रुता या मित्रता के कारण आपस में मिलते हैं तब उनकी संस्कृतियाँ एक दूसरे को प्रभावित करने लगती हैं, ठीक उसी प्रकार, जैसे दो व्यक्तियों की संगति का प्रभाव दोनों पर पडता है।

3. जो जाति केवल देना ही जानती है, लेना कुछ नहीं, उसकी संस्कृति का एक-न-एक दिन दिवाला निकल जाता है। इसके विपरीत, जिस जलाशय के पानी लानेवाले दरवाज़े बराबर खुले रहते हैं, उसकी संस्कृति कभी नहीं सूखती। उसमें सदा ही स्वच्छ जल लहराता रहता है और कमल के फूल खिलते रहते हैं। कूपमण्डूकता और दुनिया से रूठ कर अलग बैठने का भाव संस्कृति को ले डूबता है।

4. भारत देश और भारतीय जाति इस दृष्टि से संसार में सबसे महान है क्योंकि यहाँ की सामाजिक संस्कृति में अधिक-से-अधिक जातियों की संस्कृतियाँ पची हूई है।

प्रश्न

1. संस्कृति और सभ्यता का अंतर समझाइये।
2. संस्कृति और प्रकृति में क्या अंतर है?
3. समझाइये कि आदान-प्रदान से संस्कृति का विकास होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहिंसा का पाठ

विजयेन्द्र स्नातक

(विजयेन्द्र स्नातक साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान है। समीक्षक, संपादक, पत्रकार तथा अध्यापक के रूप में वे विख्यात हैं। उन्होंने साहित्य की अनेक समस्याओं पर मौलिक और गंभीर विचार प्रकट किये है।

प्रस्तुत लेख में वे गाँधीजी के व्यक्तित्व की महानता पर प्रकाश डालते हुए कहते हैं कि वे छोटी- छोटी कथायें सुनाकर आदर्शों की महिमा बच्चों को समझाते थे। सत्य और अहिंसा के आदर्श समझाने के लिए दो कथाओं का उल्लेख यहाँ हुआ है।)

अतीत और आदर्श की बात चल पड़ी है तो अपने जीवन के एकाध पृष्ठ आपके सामने खोलता हूँ। इसलिए नहीं कि यह मेरे चरित्र के किसी उज्ज्वल पक्ष को उद्घाटित करता है, बल्कि इसलिए कि आदर्श की बात किस तरह बालक-मन पर अमिट छाप छोड़ जाती है।

अपने जीवन में सबसे पहली बार जब महात्मा गांधी को देखा था तो कोई प्रेरणा नहीं मिली थी। दूर से देखने पर श्रुत-महिमा तक ही बालक पहुँच पाता है। दूसरी बार सन् 1929 में गाँधीजी को बहुत समीप से देखा। उन्होंने खादी के सम्बन्ध में हम लोगों से वचन भरवाये थे। तब उनकी आत्मकथा पढ़कर प्रेरणा मिली थी। सत्य को समझाने के लिए उन्होंने एक लघु-कथा सुनाई थी जो आज भी याद है। आप भी उसे सुन लीजिए।

मदीना शहर के किसी मुहल्ले में दो व्यक्तियों में किसी बात को लेकर झगड़ा हो गया। दोनों एक दूसरे पर झूठ बोलने का आरोप लगा रहे थे। कौन सच बोल रहा है जब इसका फ़ैसला पड़ोसी न कर सके तो उन्हें सलाह दी गयी कि वे सही इंसाफ़ केलिए शहर-अदालत के बड़े काज़ी के पास जायँ और अपने झगड़े का फ़ैसला करावें। लोगों को यक़ीन था कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क़ाजी जी सच्चे ईमानदार, इंसाफ़ पसन्द न्यायाधीश है। वे ज़रूर दूध का दूध और पानी का पानी कर देंगे।

अपनी-अपनी मिसल लेकर दोनों व्यक्ति क़ाज़ीजी के घर पहुँचे। वे देखते क्या हैं कि काज़ी मियाँ अपनी बकरी को, जो खूंटे से खुलकर बगीचे में भाग आई थी, पुचकार कर पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। पुचकारने के साथ अपने हाथ और मुख से ऐसे इशारा कर रहे थे कि मानो उनके हाथ में बकरी के लिए रोटी हो। दरअसल उनके हाथ में कुछ नहीं था, वे यों ही झूठ -मूठ बकरी को फुसला-बहका कर पकड़ना चाहते थे। वे बकरी को झाँसा दे रहे थे। जब इन दोनों व्यक्तियों ने काज़ीसाहब का बकरी के साथ धोखा-धड़ी का यह व्यवहार देखा तो वे दोनों उल्टे पाँव वापस हो लिए। काज़ीसाहब ने देखा कि दो आदमी यहाँ तक आकर, बिना मिले, बिना बात किए वापस लौट रहे हैं तो उन्हें अचरज हुआ और उन्होंने आवाज़ देकर उन्हें वापस बुलाया और उनसे चुपचाप लौटने का कारण पूछा। उन्होंने कहा, 'काज़ीसाहब, हम आपको सच्चा और ईमानदार इंसान समझकर आपके पास अपने झगड़े का फ़ैसला कराने आये थे। लेकिन यहाँ आकर हमने देखा कि आप तो एक बेजुबान जानवर को पकड़ने के लिए झूठ-मूठ रोटी का झांसा देकर धोखा-धडी कर रहे हैं तो आप हमारे झूठ-मूठ का सही इंसाफ़ कैसे करेंगे। जो अपनी पालतू बकरी के साथ सच्चा नहीं है वह हमारे साथ सच्चाई का आचरण कैसे निभा सकेगा। हम तो सत्य और न्याय की तलाश में निकले थे। आपकी सत्यनिष्ठा हमारे सामने प्रकट हो गयी। हमें माफ़ कीजिए। हम आपसे अपना फ़ैसला कराना नहीं चाहते।' यह कह कर वे दोनों व्यक्ति काज़ी-साहब की नज़र से ओझल हो गये।

'काज़ी और बकरी' शीर्षक इस कहानी से महात्मा गाँधी ने हम बालकों को सत्य का जो स्वरूप समझाया था वह किसी दर्शन के ग्रंथ से भी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं समझाया जा सकता। जानवर के साथ भी झूठ का, झाँसे का, छल का व्यवहार त्याज्य है। सत्य निर्भ्रान्त होना चाहिए। मूक और निरीह को छलने वाला व्यक्ति झूठा है, पाखंडी है। आज भी जब कभी मैं किसी व्यक्ति को जानवर या बच्चे के साथ ऐसा फुसलाने का खेल करते देखता हूँ तो काज़ी मियाँ की बकरी और बापू की वाणी मेरे प्रत्यक्ष हो जाती।

अहिंसा के सम्बन्ध में मेरी जो कुछ भी धारणा है उसका आधार गौतम बुद्ध, महावीर स्वामी, ईसामसीह या सम्राट अशोक नहीं, महात्मा गाँधी ही हैं। एक कहानी बचपन में ही उपदेश कथाओं में पढी थी जिसमें अहिंसा का सात्विक प्रभाव वर्णित है। कहानी बहुत मशहूर है। आपने भी पढी होगी! लेकिन अच्छी बात को फिर सुनने में कोई हानि नहीं। नाम-जप में तो एक ही शब्द की हजार-लाख बार आवृत्ति होती है। आइए आज फिर हम दोनें एक साथ बैठकर इस कहानी को दोहरा लें।

अरब देश में एक बड़ा दयालू, अहिंसक, ईश्वर-भक्त व्यक्ति रहता था! नाम था उसका शेख युसुफ़। जाड़े की एक सर्द रात को किसी अनजान व्यक्ति ने युसुफ़ का दरवाज़ा खटखटाया और व्यथा भरे शब्दों में रात काटने की शरण माँगी। उस व्यक्ति के पीछे राजा के सिपाही लगे थे और वह उनसे छिपता फिर रहा था। युसुफ़ ने बड़े प्यार से अपरिचित को अतिथि मान कर भीतर बुलाया। उसने पीने को पानी, खाने को भोजन और सोने के लिए बिस्तर दिया। थका-माँदा वह आगन्तुक खा-पीकर गहरी नींद में सो गया। सूर्य की पहली किरण का प्रकाश फैलते ही युसुफ़ ने उस अतिथि को नींद से जगाया और कहा कि आप इस धुँधलके में निकल जाइये ताकि राजा के सिपाही आपको पहचान न सकें। रात को आपकी सेवा में मुझसे जो त्रुटि हुई हो उसके लिए मुझे क्षमा करें। हाँ, मार्ग की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुविधा के लिए यह धन आप साथ ले जाइए। इसमें संकोच न करें। जो कुछ मेरे पास है वह मेरे नहीं, प्रभु का है। यह घर भी एक अतिथिशाला जैसा ही है। इसे आप अपना ही समझे।

शेख युसुफ़ की इस उदारवाणी से आगन्तुक को प्रभु की दिव्यवाणी सुनाई दी। उसने कृतज्ञता के साथ हाथ जोड़कर युसुफ़ को सलाम किया और रुँधे गले और सिसकती आवाज़ में कहा, "शेख! मैं आपके एहसान को ज़िन्दगी भर नहीं भूलूँगा। आपने मुझे रात को सिर्फ पनाह ही नहीं दी बल्कि अँधेरे और गुनाहों की दुनिया में भटकते हुए मुझे ज़िन्दगी की रोशनी भी दी है। आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। यदि आपकी इज़ाजत हो तो मैं अपनी बात पेश करूँ।"

युसुफ़ आगन्तुक के विनयभाव को समझ नहीं सका। उसने कहा, "हे मेरे रात के मेहमान! मैं ने तो अपना इंसानी फ़र्ज अदा किया है। कोई उपकार नहीं किया। मैं अपने आपको धन्य मानता हूँ कि मुझे अपने एक मुसीबतज़दा भाई की सेवा का मौका मिला। आप क्या कहना चाहते हैं। कहिए मैं आपकी बात सुनने को तैयार हूँ।"

आगन्तुक सहमी और काँपती आवाज़ में बोला, "शेखसाहब, मेरा नाम इब्राहीम है। आपके बड़े बेटे की हत्या मैंने की है। मैं ही वह पापी-नृशंस व्यक्ति हूँ जिसने आपके बुढ़ापे का सहारा छीना है। आपके मृत पुत्र की आत्मा को शान्ति तभी मिलेगी जब आप उसके हत्यारे का वध कर देंगे। मेरा सिर आपके सामने हाज़िर है। उठाइए तलवार और अपने प्यारे बेटे की हत्या का बदला चुका कर खून का बदला खून से पूरा कीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शेख युसुफ़ अपने बेटे के हत्यारे इब्राहिम को सामने सिर झुकाए खड़ा देखकर हतप्रभ थे। उनके भीतर मृत पुत्र के स्मरण से भीषण तूफान उठ खड़ा हुआ था। वात्सल्य का अपार पारावार जो बेटे की हत्या से सूख गया था एक बार फिर तरंगायित हो उठा। युसुफ़ की चिन्तन शक्ति कुंठित हो गई। इब्राहीम हत्यारा था, प्रतिशोध का पात्र था, लेकिन वह शरणागत भी तो था। युसुफ़ के मन में दैवी प्रेरणा का स्फुरण हुआ और उन्होंने संयत स्वर में इब्राहीम से कहा, "तुमने जो कुछ अपने अविवेक से किया है, आवेश के क्षण में किया होगा। मैं उसे भूला तो नहीं लेकिन भूल जाना चाहता हूँ। मुझे भूले दर्द की याद मत दिलाओ। मेरी प्रार्थना है कि तुम फ़ौरन यहाँ से चले जाओ, कहीं ऐसा न हो कि मेरी दानवी वृत्ति जग जाय और मैं प्रतिशोध के लिए हिंसा पर उतार हो जाऊँ। तुम को छिपकर भागने के लिए अधिक धन की ज़रूरत होगी, यह रुपयों की थैली भी साथ लेते जाओ। मैं तुम्हें माफ करता हूँ। तुम्हारे चले जाने से मेरे मन की कालिमा धुल जाएगी। मैं शान्तचित्त होकर क्षमा को पूरा प्रतिशोध और अहिंसा को सच्चा प्रतिकार समझूँगा।

शेख युसुफ़ ने इब्राहीम को माफ़ करने के बाद अपने मृत पुत्र को मन ही मन सम्बोधित करते हुए कहा - "प्यारे बेटे, तेरे लिए मैं दिन-रात तड़पता रहा हूँ। आज तेरे हत्यारे से मैंने तेरी हत्या का पूरा बदला ले लिया। तेरे हत्यारे इब्राहीम का पाप उसके प्रायश्चित की आग में दग्ध हो गया है। जिस प्रकार मैं शरणागत इब्राहीम को क्षमा करके सन्तुष्ट हूँ, मेरे प्यारे बेटे, अब तू भी शान्ति के साथ चिरनिद्रा में सो जा।"

शेख युसुफ़ की यह मर्मकथा क्षमा और अहिंसा की चरम परिणति है। क्षमा से बड़ा कोई प्रतिशोध नहीं और अहिंसा से बढ़कर कोई प्रतिकार नहीं। मुझे अहिंसा की व्याख्या के लिए इस कथा से अच्छी कहानी न मिलती।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कठिन शब्दार्थ

काज़ी - मुसलमानी धर्म के अनुसार न्याय की व्यवस्था करनेवाला, फुसलाना - मीठी मीठी बातें कहकर अनुकूल करना, बहकाना - धोखे से किसी को ठीक राह से हटाना, झाँसा देना - धोखा देना, पनाह - शरण, मुसीवतज़दा - मुसीवत में पड़ा हुआ, तरंगायित - तरंगित, जिसमें तरंगें उठती हो।

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1. जो अपनी पालतू बकरी के साथ सच्चा नहीं है वह हमारे साथ सच्चाई का आचरण कैसे निभा सकेगा।

2. जानवर के साथ भी झूठ का, झाँसे का, छल का व्यवहार त्याज्य है। सत्य निर्भ्रान्त होना चाहिए। मूक और निरीह बकरी को छलने वाला व्यक्ति झूठा है, पाखंडी है।

3. जो कुछ मेरे पास है वह मेरा नहीं, प्रभु का है। यह घर भी अतिथिशाला जैसा ही है। इसे आप अपना ही समझें।

4. आपने मुझे रात को सिर्फ पनाह ही नहीं दी, बल्कि अन्धेरे और गुनाहों की दुनिया में भटकते हुए मुझे ज़िन्दगी की रोशनी भी दी है।

5. मैं शान्तचित्त होकर क्षमा को पूरा प्रतिशोध और अहिंसा को सच्चा प्रतिकार समझूँगा।

6. जिस प्रकार मैं शरणागत इब्राहीम को क्षमा करके सन्तुष्ट हूँ, मेरे प्यारे बेटे, अब तू भी शान्ति के साथ चिरनिद्रा में सो जा।

संक्षेप में उत्तर लिखिए

1. काज़ी और बकरी की कथा लिखिए और उसका संदेश समझाइये?

2. शेख युसुफ़ ने अपने बेटे की हत्या का बदला कैसे चुकाया?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिवजी की बारात

विद्यानिवास मिश्र

(डॉ. विद्यानिवास मिश्र संस्कृत और हिन्दी के बहुत बडे पंडित हैं। भारतीय साहित्य और संस्कृति के अध्यापक के रूप में उन्होंने देश-विदेश के विद्यालयों में काम किया है। हिन्दी के ललित निबन्धकार के रूप में वे अग्रगण्य हैं। 'तुम चन्दन, हम पानी', 'मेरे राम का मुकुट भीग रहा है' आदि उनके निबन्ध संग्रह हैं।

मिश्रजी ने शिव के द्वितीय विवाह के प्रसंग में आधुनिक वैवाहिक प्रथाओं का पौराणिक परंपरा से संबन्ध जोडा है। लेखक ने इस व्यंग्य लेख में पहली पत्नी सतीदेवी के जल कर मर जाने के बाद हिमवान की पुत्री पार्वती से शिवजी के दूसरे विवाह-प्रसंग को लेकर बारात की प्रथा, वृद्ध-विवाह का अधिकार, गणेश के द्वारा पूजा, दूसरी पत्नी के वर्चस्व आदि विवाह की आधुनिक प्रथा का परिचय दिया है। लालित्य इस निबन्ध की प्रमुख विशेषता है।)

पहली पत्नी सती देवी जल कर मरीं तो कुछ दिन तो शिव बाबा उन्हीं के शोक में पागल रहे, यहाँ तक कि भूत-प्रेतों से उन्होंने संगति कर ली और मसान में ही धूनी रमाने लगे। कैलास का आश्रम उजड़ चला, कुबेर भंड़ारी अलकापुरी में ताला लगाकर इन्द्र के दरबार में मुजरा सुनने चले गये। 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' चरितार्थ होते ही शिव बाबा ने दीन-दुनीया से वैराग्य ले लिया। अब लम्बोदर गणेशजी को चूल्हा सेंकना पड़ा, सो खाने के लिए तो दो हाथों के अलावा सूंड का भी सदुपयोग करने में वे कुशल थे, पर रसोई बनाने में उन्हें अपनी अम्मा का दूध याद आने लगा। और उन्होंने काम छोड़ने की बाकायदा नोटिस दे दी। बूढे नन्दी को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी अब गोग्रास मिलना बन्द सा हो गया और जब-तब इस श्मशान से उस श्मशान तक फेरी लगाने से वे असहयोग करने लगे। फलतः शिवजी ने अन्तरंग कैबिनेट की बैठक बुलवायी। अन्तरंग कैबिनेट में जैसा कि विश्व-विदित है गणेशजी चीफ सेक्रेटरी का काम करते हैं, भैरवजी रक्षा विभाग संभालते हैं, कुबेर वित्त-मंत्री हैं और नन्दी देशाटन में पंडित होने के कारण विदेश - मंत्री का भार सँभालते हैं। आज-कल सती के निधन से गृह-मंत्री का पद रिक्त है।

कैबिनेट की बैठक शुरू होते ही भूतों का प्रदर्शन शुरू हुआ और नारे लगने लगे कि भाँग का कोटा बढ़ाया जाय, नहीं तो नशातोड़ हड़ताल शुरू होगी। भैरव जी बाहर निकले और किसी तरह इस उपद्रव को उन्होंने शान्त किया। मीटिंग शुरू हुई, कुबेर ने सूचित किया कि घोर कुप्रबन्ध के कारण आर्थिक स्थिति चौपट है, आप देशाटन में रहते हैं, यहाँ जम के दावतें होती है, इस तरह एक दिन भी काम आगे नहीं चलेगा। गणेशजी ने प्रतिवाद करना चाहा, पर उन्हें मतदान का अधिकार न होने के कारण बोलने का अवसर नहीं दिया गया। नन्दी ने निवेदन किया कि गृह-विभाग पर यदि कोई नियुक्ति शीघ्र न की गई, तो विदेश में अपनी जमी हुई साख भी उखड़े बिना न रहेगी। भैरव ने इसकी पुष्टी की और बतलाया कि राशन की कटौती अब अधिक करने पर सेना में विद्रोह फ़ैलने की आशंका है, लिहाजा गृह-मंत्री का पद रिक्त नहीं रखा जा सकता। प्रधान मंत्री विधुर रहकर इस शासन को नहीं चला सकते। शिव बाबा ने पहले तो त्रिशूल चमकाया और सब को भाग जाने को कहा। गणेशजी ने उसको कार्य वाही में दर्ज नहीं किया पर बाद में उन्होंने रामजी का स्मरण करके अपना निर्णय दिया कि देखो भाई, दूसरी शादी है, वह भी एक सुयोग्य पुत्र के होते हुए ढलती उम्र में। बडी इहलोक हँसाई होगी पर हाँ, यदि किसी कुमारी की बुद्धि पर सचमुच पत्थर पड़ जाय और वह स्वयं मुझे पाने के लिए तपस्या

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करे, तो मैं उस सम्वन्ध में पुनर्विचार केलिए प्रस्तुत हो सकता हूँ। कुवेर ने सहमति प्रकट की और मीटिंग वरखास्त हुई।

कुवेर ने नारद को मिलाकर यह साजिश की कि बहुत मनौती के वाद जड़राज हिमालय के घर में एक कन्या आयी है, किसी तरह उस कन्या से सम्वन्ध पक्का हो, तो पाँचों उँगली घी में हों। हिमालय दहेज भरपूर देगा और हिमालय की कन्या कुछ सती की तरह तेज तो होगी नहीं, अपना चाकचिक्य रहेगा। सो नारद दन्द-फन्द में उस्ताद ठहरे, ज्योतिपी वनकर उन्होंने अनजान वालिका पार्वती के मन में शिव जैसे वूढ़े और नीरस पति की स्वामिनी वनने में विश्व की ऐश्वर्य-प्राप्ति की ऐसी आशा भर दी कि वह वेचारी सचमुच अन्न-जल तज कर शिव केलिए तप करने लगी। ब्रह्मा को भी अपने वौराह लड़के की शादी ठीक करने के लिए दिलचस्पी हुई। उन्होंने सप्तर्पियों को कन्या- निरीक्षण के लिए भेजा; पर वूढ़े वर को सप्तार्पियों के निरीक्षण से सन्तोप नहीं हुआ और भेस वदलकर उन्होंने स्वयं कन्या-परीक्षण किया। कन्या पसन्द आनी ही थी, सो पसन्द आई। विवाह पक्का हुआ और सुदिन तै हो गया। कैविनेट की फिर मीटिंग वुलायी गयी और विशेप आमंत्रण पर विष्णु भगवान् भी परामर्श देने के लिए आये।

शिव वावा ने आरम्भ में ही हाथ जोड़कर विनती की कि आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं और घर में कोई प्रवन्ध करने वाला वडा-वूढा भी नहीं वैसे ही दूसरी शादी है, सीधे-सादे सुधारवादी ढंग से विवाह हो जाय। निमंत्रण-पत्र छपाकर वारात सजाने और धूम-धाम करने की ज़रूरत नहीं है। विष्णु ने बीच में ही बात काटनी चाही कि ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करके आप दूसरे विवाह करने वालों का आनन्द ही छीन लेना चाहते हैं बारात की

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिम्मेदारी मेरी, विवाह लोकाचार की विशद विधि से होगा। इस पर नन्दी ने अपनी राय ज़ाहिर की कि ठाठ-बाठ से विवाह हो। मुझे भी खुशी होगी, पर विवाह के पूर्व पब्लिसिटी न हो, नहीं तो बड़ा स्कैंडल होगा वैसे ही बारात इस मुहल्ले से उस मुहल्ले में जानी हैं। देवताओं को किसी दूसरे व्याज से बुला लीजिए। नन्दी का यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और चीफ सेक्रेटरी ने अविलम्ब देवताओं के पास विष्णु भगवान् की ओर से एक चाय-पार्टी के लिए निमंत्रण भिजवा दिया, पर शिवजी ने अपने यहाँ की पब्लिसिटी का काम अपनी सेक्रेटरी गंगाजी को सौंप रखा है, सो गंगाजी इतनी तेज़ है कि बात की बात में सारी दुनिया में उनके दरबार की हर एक रिपोर्ट पहुँचा देती है और सख्त ताकीद के बावजूद भी उन्होंने इस विवाह की सूचना द्रुतगति से प्रसारित कर दी। दूसरा कोई इस तरह भंडाफ़ोड़ करता तो पदमुक्त कर दिया जाता, पर गंगाजी ठहरी सिर चढ़ी पर्सनल सेक्रेटरी, सौ खून भी उनको माफ, शिवजी एक बार बिगड़कर चुप हो गये। अब नाराज़ होने से कोई फायदा भी नहीं था। समस्त जगत् के नंगे भिखमंगे, नचनिया, बजनिया और लूले-लँगड़े इस वर की खुशी में अपना मौरूसी हक मानकर बाराती बनने केलिए एकत्र हो गये। देवताओं की सवारी भी एक-एक करके पधारने लगी। भृंगी के गण भी सजने-धजने लगे। थोड़ी ही देर में बहुत बड़ा कोलाहल मच गया, जिसमें हाथियों की चिंग्घाड़, सिंहों की दहाड़ और भैंसों की चीत्कार तक डूब जाती थी। अब तक किसी देवता की शादी में ऐसी बारात नहीं सजी थी, क्योंकि कोई ऐसा मूजी हिमालय जैसा फँसा न था। हिमालय को जब इस तैयारी की आहट लगी, तो उसने भी अपने गड़े खजानों को खोल दिया और अपने सर्वस्व की बाजी लगा बारात के सत्कार का आयोजन करना शुरू कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब इधर विष्णु भगवान सपत्नीक पधारकर वर की शोभा संवारने में लगे। लक्ष्मीजी ने चाहा कि जूटा-जूट खुले, उसमें तेल-कंघी का संयोग हो पर एक गांठ छूते ही गंगाजी वेग से उमड़ पड़ी तो लक्ष्मीजी भींग कर दूर भागीं। विष्णु भगवान ने सुझाया कि वर की शोभा बनाने की जरूरत नहीं साक्षात् क़ामदेव जिसकी एक नजर में जलकर क्षार हो गया, उसकी शोभा कोई क्या बनायेगा। हाँ, वर के अनुरूप बारात जरूर सजनी चाहिए। सो उन्होंने अगल बगल रहने के लिए दो कमनीय मूर्तियों का चुनाव किया, एक नकलोलेश्वर और दूसरे कनडेबरेश्वर। नकलोलेश्वरजी के नाक-कान जहाँ लम्बाई में एक दूसरे से होड़ करते थे, वहाँ कनडेबरेश्वर की टाँगें कैंची की तरह एक साथ आगे-पीछे चलती थीं तो कनडेबरेश्वर जी के फीलपाँव वाले पैर जम-जमकर धरती पर पड़ते थे। माथे से लेकर तोंद तक गहरा सिन्दूर पोतकर चूहे की नकेल हाथ में पकड़ गजाननजी वर के आगे-आगे चलने के लिए मचल गये। लोगों ने समझाया-बुझाया, विष्णु ने तो डाँट भी बतायी, पर वर ने अपने लाड़ले का मान रखना चाहा, इसलिए बेटे को आगे करके बाप ब्याहने चला। कुबेर ने सवारी के लिए अपना हेलिकाप्टर फूलों से सजाकर खड़ा किया, पर नन्दी की एक हुंकार ने शिव बाबा को उस पुष्पक विमान को अस्वीकार करने के लिए विवश कर दिया। आखिर विचारा यही तो साथ खटता रहता है। अप्सराओं ने भरत नाट्यम् के प्रयोग के लिए अपनी सेवाएँ अर्पित कीं, तो डाकिनियों की लोकनृत्य - मंडली ने अपना अग्र अधिकार दिखलाकर उन्हें पिछे ढकेल दिया। खैर, इसके बाद बारात कैलास से डोली। विष्णु भगवान् ने देखा कि इस बारात से अलग चलने में ही देवताओं की नाक जूटी रह सकती है, नहीं तो महादेवजी के दरबारी आज देवलोक की नाक कटाये बिना न रहेंगे। और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवताओं को लेकर एक बगल हो लिये।

किरन डूबते-डूबते बारात हिमालय के दरवाजे पहुँची। ताम-झाम के साथ सास परछने आई, सो वर के सिर पर साँप के फन का मौर; गले में मुण्डों की माला, कटि के नीचे गज का कड़कड़ा चर्म और एक हाथ में डमरू, दूसरे में लम्वा त्रिशूल देखते ही उनके हाथ से सोने की थाली छूटकर गिर पड़ी और वे गिरती-पड़ती आँगन में पहुँचकर नारद के साथ पुश्त का लोकभापा में तर्पण करने लगीं। पार्वती ने कोठे पर चढ़कर वर को इशारा किया कि गोसाई, विष्णू के रूप का ध्यान कीजिए, नहीं तो गा-बजाकर अकेले लौट जाना पड़ेगा, इस रूप को बाद में फिर धारण कर लीजिएगा। शिव बावा ने देखा कि पका-पकाया मामला विगड़ना चाहता है, तो उन्होंने विष्णु के रूप का ध्यान किया और तब क्या साँप का फण पुष्पमुकुट बन गया, जटा स्निग्धकुन्तलराशि में बदल गई, गजचर्म हंस-दुकूल बन गया और शिव की शोभा के आगे किसी की शोभा ही नहीं रही। अब जब सास परछने आई, तो जल्दी-जल्दी में उन्हीं का श्रृंगार उल्टा पल्टा हो गया। आँख का काजल माथे लगा, माथे का टीका गले में आया, पैर का गहना हाथ में, हाथ का कंकन कानों में पहना गया। देखकर वर-पक्ष के समधी ब्रह्मा भी अपनी सहज गम्भीरता छोड़कर मुक्त भाव से हँस पड़े। वह मण्डप में पहुँचाये जाने लगे कि इतने में गणेशजी को भूख लगी। वर ने गजवदन को कुम्हलाया देखा, तो कहा कि पहले उनकी मोदकपूजा हो जाय, तव मैं आँगन में चलूँगा। चार सेर जोखकर लड्डू आये, गणेशपूजा हुई और वर मंडप में आये।

विधि विधानपूर्वक विवाह हुआ और वर को सखियाँ कोहवर-घर में ले चलीं। आगे-आगे गणेशजी भी चले, पर एक तो भारी शरीर दूसरे पग-पग पर लड्डू की भेंड। कोहवर के दरबाज़े पर आते-आते उनको खड़ा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहना दूभर हो गया और धम्म से जमीन पर आ रहे। उधर या तो शिव बाबा विवाह ही नहीं करते थे, या कोहबर में छः महीने बीत गये, हिलने-डुलने का नाम नहीं। हिमालय के सामने अब बारात को टिकाना समस्या हो गई। देवताओं के नखरे, भूत-प्रेतों की बड़वानल सरीखी भूख की लपट और दामाद की निश्चिंतता, हिमालय के लिए अब असह्य हो गई। यह हालत हो गयी कि बारात के सत्कार में हिमालय का घर-द्वार बन्धक रखा गया और बारात के बिदा होने की कोई आशा नहीं। अन्त में ब्रह्मा ने अग्नि को भेजा कि किसी तरह वर को चेताकर बाहर लाये। वर महोदय शाप देकर बाहर निकले, पर दहेज के नाम पर बेटी को देने के लिए बाप के पास बावन हंडा सुहाग भर बच रहा था और पार्वती बावन हंडा सुहाग के साथ विदा हुई।

दुलहिन ने घर में पधारते ही जो मंत्रियों की दुर्व्यवस्था देखी, तो एक-एक से मंत्रियों की आशा के प्रतिकूल जवाब तलब करना शुरू किया और मंत्रिमंडल ने चुपके से इस्तीफा भेज दिया। पार्वतीजी ने संकटकालीन स्थिति की घोषणा की और राज्यपालिका बनकर शासन की बागडोर अपने हाथ में ली। और पर्सनल सेक्रटेरी गंगा को कैलास से निष्कासित कर दिया। बुढ़ऊ ने देख-सुनकर भी चुप्पी ले ली। बावन हंडा सुहाग का जोर ठहरा। खैर यह तो आगे की बात है, इस बारात ने एक इतिहास का निर्माण किया, यों कहना चाहिए कि बारात की मौजूदा प्रथा का श्रीगणेश इसी दिन से हुआ। दूसरे राज शासन में बूढ़े लोगों को दूसरी शादी करने का अधिकार मिला। तीसरे विवाह में गणेशजी की द्वारपूजा अनिवार्य अंग बनी। चौथे बैल की प्रतिष्ठा हुई और पाँचवें दूसरे विवाह की पत्नी पति के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिए पति वनी। इन्हीं पाँच परम्पराओं में शिवजी की वारात अमर हो गई है।

कठिन शब्दार्थ

संगति - साथ, धूनी रमारा - गरमी के लिए आग जलाना, चूल्हा सेंकना - खाना पकाना, लिहाज़ा - इसलिए, वरखास्त - समाप्त, पाँचों ऊँगली घी में - आनन्द ही आनन्द, वौराह -पागल, भंडा फोड करना - रहस्य खोलना, मौरूसी - पैतृक, मूजी - कंजूस, कैंची - कतरानी, नकेल - लगाम, नाक कटाना - अपमानित करना, नाक जूटी रहना - इच्छा होना, परछना (परछन करना), शादी के लिए वर को तिलक लगा कर आरती करना, कोहवर घर - शादी के समय कुल देवता की पूजा करने का कमरा, वावन हँडा - वडी भारी मात्रा में

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1. सो नारद दन्द-फन्द में उस्ताद ठहरे, ज्योतिषी वनकर पार्वत्ती के मन में शिव जैसे वूढे और नीरस पति की स्वामिनी वनने में विश्व की ऐश्वर्य प्राप्त की ऐसी आशा भर दी कि वह विचारी सचमुच अन्न-जल तज कर शिव के लिए तप करने लगी।

2. अब तक किसी देवता की शादी में ऐसी वारात नहीं सजी थी, क्योंकि ऐसा मूजी हिमालय जैसा फँसा नहीं था।

3. वर की शोभा बढाने की ज़रूरत नहीं, साक्षात् कामदेव जिसकी एक नज़र में जल कर क्षार हो गया, उन की शोभा कोई क्या वनायेगा।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. साँप का फण पुष्पमुकुट बन गया, जटा स्निग्ध कुन्तलराशि में बदल गयी, गजचर्म हँसदुकूल बन गया और शिव की शोभा के आगे किसी की शोभा ही नहीं रही।

प्रश्न

1. सतीदेवी के जल कर मर जाने के बाद कैलास की स्थिति में क्या क्या परिवर्तन आये?
2. शिव को दूसरा विवाह करने की प्रेरणा कैसे मिल गयी?
3. विवाह में नारद की क्या भूमिका थी?
4. विश्व के घर पधारते ही पार्वती जी ने क्या किया?
5. इन्हीं पाँच परंपराओं में शिव जी की बारात अमर हो गयी। किन परंपराओं में?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

गजानन माधव मुक्तिबोध

(गजानन माधव मुक्तिबोध मुख्यतः कवि है, किन्तु पत्रकार, चिन्तक और आलोचक के रूप में भी उनका अल्लेखनीय स्थान है। मुक्तिबोध रचनावली में इन की समग्र रचनायें, संकलित हैं। 'एक साहित्यिक की ड़ायरी' इन की महत्वपूर्ण कृति है।

मुक्तिबोध मार्क्स के विचारों से प्रभावित है। उन्होंने इस संस्मरण में राष्ट्रपिता महात्मागान्धी जी के योगदान का मौलिक ढंग से विवेचन एवं विश्लेपण किया है। हज़ार वर्षों में एकाध बार जो आदमी नज़र आते हैं उनमें महात्मा गाँधी का नाम आता है। गाँधीजी ने नैतिक अस्त्रों का राजनीतिक इस्तेमाल करते हुए भारत को स्वतंत्र किया। उन की सफलता का रहस्य जनता की आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति में उन की निष्ठा थी। जीवन में सादगी और स्वावलंबन, सद् भावना और एकता का सन्देश दिया। उन्होंने ऐसे भारत की कलपना की जिस में ऊँच- नीच का कोई स्थान नहीं है।)

हज़ारों वर्षों में एकाध बार जो आदमी नज़र आते हैं, उनमें महात्मा गाँधी का नाम आता है। क्यों? इसलिए कि उन्होंने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विशुद्ध नैतिक अस्त्रों का सफलतापूर्वक प्रयोग किया। अहिंसा तथा सत्याग्रह उनके ये दो प्रधान सिद्धान्त हैं, जिनके प्रयोग द्वारा उन्होंने भारतीय स्वाधीनता स्थापित की। ब्रिटिश साम्राज्य में एक ज़माने में सूरज कहीं नहीं डूबता था। आज भी सूरज उगता है, लेकिन ब्रिटिश साम्राज्य चुक गया है। इस प्रचण्ड ब्रिटिश साम्राज्य को, जो सन् सैंतालीस के पहले दुनिया के सभी हिस्सों में था, महात्मा गाँधी ने ऐसी करारी चोट दी कि वह हिल गया।

महात्मा गाँधी ने अपने इस कार्य द्वारा विश्व-साहित्य में एक महान

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घटना उपस्थित कर दी। आज अमरीका और अफ्रीका की नीग्रो तथा अन्य पराधीन जातियाँ गाँधी जी के नैतिक अस्त्रों का प्रयोग करती हैं। महात्मा गाँधी के अहिंसा तथा सत्याग्रह के सिद्धान्त इतने सफल क्यों हुए?

महात्मा गाँधी न केवल अपने नैतिक सिद्धान्तों में विश्वास करते थे, जनता की आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति में उनकी निष्ठा थी। उन्हें मालूम था कि जनता त्याग और बलिदान के उच्च आदर्शों का निर्वाह करते हुए एक-न-एक दिन भारत को स्वाधीन करायेगी ही। इसीलिए उन्होंने निष्ठापूर्वक अपने को जनता का बना लिया। वे उसके अपने हो गये। वे झोपड़ियों में रहते, नंगे पैर चलते, एक धोती- भर पहनते। जिस तरह भारत का दरिद्रनारायण रहता है, उसी प्रकार उन्होंने अपने को ढाल लिया।

हाँ, ढाल लिया। मोहनदास करमचन्द गाँधी के पितृश्री राजकोट रियासत के दीवान थे। उनके यहाँ सब कुछ था - धन, दौलत, पैसा, इज्ज़त और ताकत। गाँधीजी ने सबको ठुकरा दिया। अपनी आदतों को सुधारा, अपने आप पर काबू किया, स्वयं को वशीभूत कर लिया। वे हृदय की शुद्धि के लिए अनशन करते। उपवास करते।

क्यों करते? इसलिए कि जब मन सुखेच्छाओं के वशीभूत रहता है तो कर्तव्य- कार्य करने के कठोर मार्ग पर नहीं चल सकता। इसलिए, मन को वश रखना आवश्यक है। उसको मजबूत बनाने के लिए यह जरूरी है कि वह अपने सुख या दुःख को न देखकर, दूसरों के दुःख को देखे।

वैष्णव जन तो तेणे कहिए,
जे पीर पराई जाणे रे !

इस पराई पीर के पीछे उन्होंने अपना सब कुछ त्याग दिया। इसलिए वे महात्मा थे। उनकी झोपड़ी में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई सभी धर्मों के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भजन गीत, स्तोत्र और आयतें गूँजती रहती थी। सन् 1927 में महात्मा गाँधी ने कहा था- मैं इन निर्णयों पर आया हूँ: 1) सब धर्म सत्य हैं (2) सब धर्म में कोई न कोई गलती है (3) जैसे मेरा हिन्दू धर्म प्यारा, वैसे ही मुझे सब धर्म प्यारे हैं।

जिस समय महात्मा गाँधी राजनीति में अवतीर्ण हुए उन दिनों देश की दशा क्या थी? जनता कष्ट में डूबी हुई थी, लेकिन सिर ऊँचा नहीं कर सकती थी। शिक्षित मध्य-वर्ग को मालूम नहीं था कि वह किधर जाये। प्राचीन की ओर जाने में उसकी आँखों से सामाजिक जीवन लक्ष्य लुप्त हो जाता है। जो कुछ नवीन था, वह पश्चिम से मिला था, उसकी उस पर अटूट श्रद्धा न थी। सर्वोच्च रईस जमींदार वर्ग अंग्रेजों के आंचल में दुबक गया था। उद्योगपति वर्ग अंग्रेजों से नाराज़ था, लेकिन कर कुछ नहीं सकता था, क्योंकि उसके प्रतिदिन के स्वार्थ अंग्रेजों से लगे हुए थे। देश में विफलता और उदासीनता का साम्राज्य था।

उस समय राजनीति दो ढंग की थी। या तो कांग्रेस- अधिवेशनों में प्रस्ताव पास करते रहिए और देश में भाषण देते जाइये, या आतंकवादी विस्फोट करते रहिए। दोनों प्रकार की राजनीति में सामान्य जनता को कहीं भी क्षेत्र नहीं मिलता था।

यद्यपि कांग्रेस जनतंत्रात्मक संस्था थी, फिर भी वोट देने का अधिकार सीमित था और वह उच्चतर वर्गों के ही हाथ में था। महात्मा गाँधी ने सबसे पहले कांग्रेस के विधान में संशोधन कर, उसे पूरी जनता के लिए, किसानों और मज़दूरों के लिए खुला कर दिया। उसमें किसान-ही- किसान आये, जिसमें मध्य वर्ग के लोग भी दिखायी देते थे। कांग्रेस पर किसानों का प्रभाव बढ़ता चला गया। मजदूर भी आये, किन्तु कब।

अब काम का नम्बर आया। आतंकवादी रास्तों का विरोध किया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया, पुराने शिकायती तरीके और भाषण छोड़कर, काम की एक नयी पद्धति अंगीकार की गयी। अंग्रेजों के प्रतिरोध के लिए, निर्भयता और सत्यनिष्ठा की बुनियाद पर, असहकार और सत्याग्रह का सिद्धान्त रखा गया।

कार्यक्रम दो प्रकार के थे: (1) शान्तिपूर्ण ढंग से, अहिंसात्मक पद्धति से अंग्रेजों के आधिपत्य का प्रतिरोध (2) समाज-सुधार तथा रचनात्मक कार्य- जैसे अस्पृश्यता का नाश, अल्पसंख्यकों की समस्याओं का समाधान, चर्खा चलाना ग्रामीण उद्योगों को प्रोत्साहन देना इत्यादि।

उन दिनों सामान्य जनता पर अंग्रेजों की धाक थी, दबदबा था। विदेशी शासकों के कृपापात्र रहने वालों का भी समाज पर खूब प्रभाव था। यह आवश्यक था कि जनता पर तायी हुई विदेशी धाक और दबदबे का, उसकी प्रतिष्ठा और सत्यपरायण बने। अंग्रेज़ सरकार की बुनियाद को खिसका देने के लिए ही महात्मा गाँधी ने सबसे पहले विदेशी शासकों द्वारा दी गयी उपाधियों के त्याग का अनुरोध किया। लोग `सर', `रायबहादुर' `खानबहादुर' और 'राय साहब' की उपाधियाँ एक के बाद एक छोड़ते चले गये। परिणाम यह हुआ कि जनता को यह प्रतीत हुआ कि ये उपाधियाँ नैतिक अधःपतन की मानसिक दासता की सूचक हैं। ये उपाधियाँ भद्देपन का लक्षण हैं, निर्लज्जता की निशानी है। जनता पर से अंग्रेज़ों की धाक उड़ गयी, उनकी प्रतिष्ठा जारी रही, लोग निर्भय होने लगे। जनता के अनुकूल एक नया वातावरण सामने आया। महात्मा गाँधी के जीवन का अनुकरण करते हुए, खाते-पीते लोग सादगी से रहने लगे। धनी, सम्पन्न वर्ग के लोगों ने भी सादगी से रहना शुरू किया। और इस प्रकार से सामान्य जनता के समान दिखाई देने लगे। गाँधी जी ने जीवन के नये आदर्श सामने रखे, पुराने मिट गये।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब तक राजनीतिज्ञ शहरों में लम्बे-चौड़े भाषण देता था। किन्तु अब महात्मा गाँधी ने बड़े-बड़े नेताओं को सादगी सिखाकर उन्हें गाँवों में भेजना शुरू किया, जिससे कि वे राष्ट्रीय मुक्ति का सन्देश गाँववालों को दे सकें। इस प्रकार गरीब जनता का प्रभाव कांग्रस पर बढ़ता गया और उसके उत्थान को लक्ष्य में रखा गया। गाँवों और कस्बों में नया जीवन लहराने लगा।

भारत के सम्बन्ध में गाँधी जी की कल्पना क्या थी मैं ऐसे भारत के लिए काम करूँगा जिसमें गरीब-से गरीब यह महसूस करेगा कि यह उसका देश है और जिसके निर्माण में उसका भी प्रभावशाली हाथ है। ऐसा भारत जिसमें न उच्च वर्ग है, न निम्न वर्ग, जिसमें अस्पृश्यता का अभिशाप अथवा उत्तेजक मद्यों या बूटियों के अभिशाप को कोई स्थान नहीं है, जहाँ स्त्रियों को वही अधिकार है जो पुरुषों को, यह मेरे स्वप्नों का भारत है।

ऐसी स्थिति में, महात्मा गाँधी भारतीय जनता को एक चुम्बक की भाँति अपने पास खींच लेते, उन्हें मन्त्रमुग्ध कर देते। वे व्यक्ति को समाज से, प्राचीन को भविष्य से, जोड़ रहे थे। वे जनता को स्वावलम्बन, आत्मनिर्भरता, प्रेम, सद्‌भावना, मानव-एकता तथा सादगी सिखाते थे।

हाँ, धनी और अंग्रेजी तरीके से जिन्दगी बिताने वाले लोगों को गाँधी जी का रास्ता कठिन मालूम हुआ, लेकिन गरीब जनता को बहुत आसान लगा। महात्मा गाँधी ने जनता के साथ अपने को एकाकार कर लिया। जनता का उत्थान उनका प्रथम लक्ष्य हो गया, धर्म उससे गौण रहा।

महात्मा गाँधी ने कहा, "आधी-भूखी जनता कोई धर्म नहीं रख सकती, न कोई कला, न कोई संगठन। मेरे लिये करोड़ भूखे लोगों को जो भी उपयोगी दिखायी दे वह सुन्दर है, और तब जीवन का सारा सौन्दर्य और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलंकरण आप-ही-आप अनुगलत होगा। मैं ऐसी कला और साहित्य चाहता हूँ जो करोड़ों जनता से बोल सकें।"

पहली बार, भारत के इतिहास में करोड़ों भूखे जनों को महत्व देने वाला, इनका सगा बनने वाला, एक व्यक्ति सम्मुख आया, जिसने उसी गरीब दबी-कुचली जनता को नैतिक साहस प्रदान करके क्या-क्या बना दिया। उस नैतिक पूर्ण जन-शक्ति के आघात से, ब्रिटिश साम्राज्य चूर-चूर हो गया। नये भारत के उस प्रणेता की मृत्यु भी उसी शहीदाना तरीके से हुई। बिस्तर पर मरने या चलते हुए हार्टफेल होने के बजाय, वह महान आत्मा हमारा राष्ट्रपिता रामनाम का पाठ करते हुए एक तुच्छ हिन्दू सम्प्रदायवादी की गोली का शिकार हुआ।

भारत ही नहीं, विश्व-भर ने इनकी मृत्यु का शोक मनाया। भारत में तीस जनवरी उन्नीस सौ अड़तालीस का दिन काली छायाओं में डूब गया था।

कठिन शब्दार्थ

अनशन- उपवास, शिकायत- Complaint, बुनियाद- नींव, धाक- प्रभाव, धाक उड़ जाना- प्रभाव नष्ट हो जाना

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1) जिस तरह भारत का दरिद्र नारायण रहता है, उसी प्रकार उन्होंने अपने को ढ़ाल दिया।

2) जब मन सुखेच्छाओं के वशीभूत रहता है तो कर्तव्य कार्य करने के कठोर मार्ग पर चल नहीं सकता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3) मैं ऐसी कला और साहित्य चाहता हूँ जो करोड़ों जनता से बोल सकें।

प्रश्न

1) धर्म के संबन्ध में गाँधीजी के विचार क्या है?
2) जिस समय महात्मा गाँधी राजनीति में अवतीर्ण हुए, उन दिनों देश की दशा क्या थी?
3) कांग्रस में गाँधीजी क्या-क्या परिवर्तन लाये?
4) अंग्रेज़ सरकार की बुनियाद को हिला देने के लिए गाँधीजी ने कौन से रास्ते अपनाये?
5) भारत के संबन्ध में गाँधीजी की कल्पना क्या थी?
6) हज़ार वर्षों में एकाध बार जो आदमी नज़र आते हैं, उन में महात्मा गाँधी का नाम आता है। समझाइए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हमारी वेशभूषा

रबीन्द्र नाथ त्यागी

(रवीन्द्र नाथ त्यागी ने कविता और व्यंग्य रचना दोनों में ही अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया है। सूखे और हरे पत्ते, कलावृक्ष, आदिम राग इनके प्रसिद्ध काव्य है। `खुली धूप में नाव पर' इनकी व्यंग्य रचनाओं का संग्रह है। सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों पर प्रहार करने के लिए उन्होंने हास्य और व्यंग्य का सफल प्रयोग किया है।

वेशभूपा के माध्यम से इन्होंने संसार में प्रचलित फैशन- प्रेम की ओर संकेत किया है। आज सब कहीं वेश भूपा का बोलचाल है। वेश भूपा ही मनुष्य की प्रतिष्ठा का मानदण्ड है। उसके पीछे समय और संपत्ति का दुरुपयोग करनेवालों पर लेखक ने व्यंग्य किया है।)

मानव जाति का जो भी इतिहास उपलव्ध है उसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रारंभिक काल खाने-पीने का युग था, मध्य काल रहने-सहने यानी कि इमारतें वनवाने (और गिराने) का युग था और आधुनिक काल पहिनने-ओढ़ने यानी कि वेपभूपा और इसी तरह के और प्रसाधनों का युग हे। खाना, कपड़ा और मकान – इन तीन वुनियादी जरूरतों के पूरा होने के बाद मानव जाति अपनी अन्तिम ज़रूरत पूरा करने की कोशिश करेगी। यह अंतिम इच्छा स्त्रियों के केस में प्रेम की क्रियाएँ सम्पादित करने में जो भी हो जाए वह ठीक ही माना जाता है। स्त्री और पुरुप के इसी वुनियादी अन्तर के कारण मिल मालिक मज़दूर से झगडा करता है, पुलिस वुलवाता है और मिल मालिक की लड़की या जवान बहिन छिपे छिपे मजदूरों से प्रेम करती है (इसके आगे की कहानी फिल्म पैगाम

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में देखिए, जिसमें दिलकश गाने, कड़कते हुए डायलाग और हसीन चेहरे भी हैं)

जैसा कि मैंने ऊपर बताया आदिकाल खाने-पीने का युग था। जो शुरू शुरू का आदिकाल था उसमें एक आदमी दूसरे आदमी को खाता था मगर बाद में चल कर मनुष्य का चरित्र कुछ गिर गया और वह पशु, पक्षी, फल और वनस्पति वगैरा पर उतर आया। महाभारत के काल में मक्खन खाने का रिवाज बड़े जोरों से चला, यहाँ तक कि कृष्ण भगवान पहिले मक्खन खाते थे और बाद में बाकी काम करते थे। बाकी कामों का पेशे के कपड़े अलग है, वकील के कपड़े अलग हैं और जज के अलग, हाँ अलबता मुवक्किल कभी-कभी जरूर नंगा दिखाई पड़ता है। रेल के मुलाज़िमों के कपड़े काले होते हैं क्योंकि रेल का इंजन काला होता है और पुलिस की पगडी लाल होती है क्योंकि खून वगैरा का पता लगाते हैं। दूसरे शब्दों में प्रत्येक पेशे उपपेशे की पोशाक अलग है। अगर कोई सज्जन तंग मुहरी की पतलून पहिने हैं हाथ में ट्राजिस्टर है और बदन पर चौड़े चैक की बुशशर्ट तो समझ लीजिए कि ये चतुर्थ श्रेणी के अधिकारी यानी कि चपरासी हैं। अगर गंदी धोती और फटे कुर्ते में कोई सज्जन हाथ में खादी का झोला लिए गतिशील होता दिखाई पड़े तो निश्चित है कि या तो किसी हिन्दी दैनिक के संपादक हैं या छायावादी युग के कोई साहित्यकार। यह अन्तर कभी-कभी इतना सूक्ष्म हो जाता है कि कवि की पोशाक अलग होती है और कहानीकार की अलग। और उसके बाद दिल्ली का कहानीकार अलग तरह ड्रेस करता है और प्रयाग का अलग। उदाहरण के लिए दिल्ली का कहानीकार कमीज के नीचे बनियान नहीं पहिनता क्योंकि ऐसा करने से बनियान गंदा हो जाता है। इसके खिलाफ़ प्रयाग का कहानीकार बनियान के ऊपर कमीज नहीं पहिनता क्योंकि उससे बनियान और कमीज दोनों के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गंदे होने का डर है। गंदगी से साहित्य को बचाना बहुत ज़रूरी है और उस कारण कुछ प्रकाशक तो लेखकों को नंगा ही रखते हैं। शासकवर्ग खादी पहिनता है। यह कपड़ा एक जादू का कपड़ा है जिसे पहिन कर पाप छिप जाते हैं। पाप की जो चीज़ें हैं वे मिल के महीन कपड़ों में ज्यादा साफ़ नजर आती हैं।

आज के युग में कपड़े न हों तो आदमी का पहिचानता कठिन हो जाए। वर्दी उतार कर पुलिस और अपराधी में अन्तर यदि आप बता दें तो मैं अपना नाम तक बदलने को तैयार हूँ हालांकि वैसे मुझे अपना नाम काफी पसन्द है। वर्दी ना हो तो दिल्ली में यह पता न लगे कि बस कौन सी है और कंडक्टर कौन सा क्योंकि धुआँ और शोर दोनों से बराबर ही निकलता है। बस एक वर्दी ही ऐसी चीज़ है जो आदमी आदमी के अन्तर को स्पष्ट करती है। मैं एक ऐसे उच्च पुलिस अधिकारी को जानता हूँ जो अपने चेहरे के प्रताप से जब भी बिना वर्दी के कहीं गए, पुलिस द्वारा पकड़े गए।

आजकल के युग में स्त्री और पुरुष की पोशाक का अंतर कम होता जा रहा है। मगर जब स्त्री और पुरुष का मौलिक अन्तर ही कम होता जा रहा है तो पोशाक को ही दोष क्यों दें। स्त्रियों की पोशाक ने देश में कई प्रकार की समस्याओं को जन्म दिया है। स्त्रियों के समाने तो यह समस्या है कि वे अपना जिस्म और कपड़े इन दिनों को एक साथ ज्यादा से ज्यादा कैसे दिखाएँ। पुरुष की समस्या यह है कि उस प्रकर वस्त्र-विहीन परकीयाओं को देख कर पराई स्त्री को माता कैसे स्वीकार किया जाए। वास्तविकता तो यह है कि इस प्रकार की स्मार्ट युवतियों के बीच अपनी धर्मपत्नी को ही माता के तुल्य समझने की तबीयत करती है। मुझे अफसोस है कि कुछ विशिष्ट कारणों से इस टापिक पर मैं यहाँ ज्यादा नहीं

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कह पाऊँगा।

कपड़े का धंधा हमारे यहाँ वैसे काफी पुराना है। कबीर कविता भी लिखते थे और कपड़ा भी बुनते थे। उन्होंने एक बार काफी मेहनत से एक ऐसी चदरिया भी बुनी थी जिसे पहिनने के बाद वे ज्यों का त्यों रख दिया करते थे। जैसे कि भारतीय फिल्में बताती हैं, रामायण के काल में भी मखमल और टैरेलीन आ गई थी मगर रिवाज इनका जरा कम था। ढाके में ऐसी मलमल बनती थी कि पूरा थान अँगूठी में से निकल जाता था। मलमल के बारे में मैं कुछ नहीं कह सकता पर इतना जरूर है कि यदि खाने-पीने की चीजों के दाम इसी तरह बढ़ते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब मलमल बनाने वाला खुद अँगूठी में से निकल जाया करेगा।

पूरा विवरण जानने के लिए जयदेव का गीतगोविन्द पढ़िए, हजारों गोपियाँ करीर के कुंज, चन्दन और पराग यानी कि सिवाय कपड़ों के बाकी सब कुछ। पुराने जमाने के सभी चित्रों में देवी-देवता नंगे नजर आते हैं, सिर्फ नीचे के भाग में लुंगी वगैरह पहिन ली और बस छुट्टी। कोई मज़ाक पसन्द देवता हुआ तो उसने गले में साँप पहिन लिया। जाड़ा लगा या हिल्स पर गये तो थोड़ा सा संखिया खा लिया और लगे महादेव उर्फ नीलकंठ कहलाने। ऐसा नहीं कि ये लोग कपड़े सिलवा नहीं सकते थे बग़ कपड़ों का रिवाज ही नहीं था। वैसे यमराज सवारी के लिए भैंस रखते थे (और घर पर दूध दही वगैरा के लिए भैंस भी जरूर रखते होंगे) मगर रहते थे नंगे। वनवास के दिनों में राम लक्ष्मण क्लीन शेव तो रहते थे यानी कि हजामत तो रोज़ बनाते थे मगर कपड़ों के नाम पर फिर वही ताजी हवा। पंचवटी के निवास के दिनों में लक्ष्मण जी जेब में चाकू तक रखते थे। जैसे ही कुमारी शूर्पणखा जी आई, झट से नाक साफ। पलक मारते ही नाक इस तरफ और शूर्पणखा जी उस तरफ। इतनी क्विक सर्विस थी जितनी कि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साहिव सिंह एंड सन्स की भी नहीं है। वैसे कुछ लोग यह भी कह सकते हैं कि चाकू शूर्पणखा ही का था और सेवा करने के बाद लक्ष्मण जी ने सधन्यवाद उन्हें वापस कर दिया होगा मगर यह दलील थोथी है। यह रेडियो सीलोन का प्रचार है कि सारी चीज़ें लंका ही में थीं, हमारे यहाँ कुछ था ही नहीं। हाँ, अलवता कपड़ों के मामले में हम जरूर पिछड़े हुए थे। लोग सिर्फ खाते पीते थे, देश में घी दूध की नदियाँ वहती रहती थीं। जाड़े में घी की नदियाँ तो कहीं कहीं जम भी जाती थीं मगर दूध की फिर भी वहती रहती थीं। दूध की जगह जब पानी की नदियाँ वहने लगीं तव भी कपड़ों का शौक नहीं बढा। यमुना के किनारे गोपियाँ नहाने आती थीं तो तव तक नहाती ही रहती थी जव तक कोई उनके कपड़े उठा कर न ले जाए। ऐसा करने से उन वेचारियों को जुकाम तक हो जाता था।

आदिकाल से हम-लोग मध्यकाल पर आते हैं। यह इमारतों का युग था। मुर्दों की इमारतें अलग थी, जिन्दों की अलग। कोई वादशाह उन्हें वनवाता था तो कोई उन्हें तुड़वाता था। शाहजहाँ इमारतें वनवाने के लिए मशहूर है और तैमूर तथा गजनवी उन्हें तुड़वाने के लिए। कवियों ने भी यही कहा कि दुनिया एक सराय है जिसे खुदा ने वनवाया है। उन दिनों की इमारतों की तुलना सार्वजनिक निर्माण विभाग की इमारतों से करना ठीक नहीं। उन दिनों स्थापत्य कला काफी पिछड़ी हुई थी। उन दिनों अगर शहशाह एक ताजमहल बनाने का हुक्म देते थे तो एक ही ताजमल बनता था। इन दिनों अगर सरकार एक ताजमहल बनवाये तो चार वनेंगे। एक ताजमहल सरकार का होगा, एक ठेकेदार बनवाएगा अपनी वीवी के लिए और दो ताजमहल चीफ इंजीनियर और एक्जीक्युटिव इंजीनियर अपने गाँव में बनवाएँगे। उसके अलावा पहिले इमारतों की मरम्मत नहीं की जाती थी। आज कल की इमारतें बनने से पहले मरम्मत होना शुरू हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मगर इन बातों में जाना इस लेख का उद्देश्य नहीं। कहने का उद्देश्य यह है कि पोशाक के मामले में यह युग भी पिछड़ा हुआ ही था। औरंगज़ेब अपनी टोपियाँ खुद ही सिल लेता था। शाहआलम तब तक अपना अंगरखा नहीं बदलता था जब तक कि मराठे दूसरा न बनवा दें। जेम्स प्रथम के पास उचित कपड़े न होने के कारण राज्याभिषेक शायद तीन दिन के लिए रुका था। रेडीमेड कपड़े उन दिनों थे कहाँ?

कितना अच्छा हुआ कि मध्यकाल समाप्त हो गया और इसके लिए मानवजाति इतिहास के प्रति सदा कृतज्ञ रहेगी। यह जमाना पहिनने का है आजकल आदमी पैदा चाहे नंगा हो मगर मरता वह कपड़े पहिन कर ही है। लाखों आदमी कपास बोते हैं, कातते हैं, ओटते हैं, सूत बनाते हैं, कपड़ा बुनते हैं और फिर करोड़ों आदमी दिन और रात उन्हें पहिनते हैं। कपड़ा पहिनने और उतारने से जो वक्त बचता है उससे बाकी काम किए जाते हैं। कपड़ों के स्टाइल हर मौसम के साथ बदलते हैं। भले लोग और औरतें दिन और रात में दस दफा तक पोशाक बदलती हैं।

कठिन शब्दार्थ

प्रसाधन- श्रृंगार, बुनियाद- मूलभूत basic, मुवक्किल- वकील का ग्राहक, मुलाजिम- नौकर, पेशा- work, occupation, बाखिलाफ- विरुद्ध, जिस्म- शरीर, उर्फ- उपनाम, थान- निश्चित लंबाई का कपडा, हजामत बनाना- to shave, दलील- बहस, वादविवाद, थोथी- खोखला, अर्थहीन, सार्वजनिक निर्माण विभाग - P.W.D, स्थापत्य कला- Architecture, ओटना- to remove cotton seed from cotton

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1. वर्दी उतार कर पुलिस और अपराधी में अन्तर यदि आप बता दें तो मैं अपना नाम तक बदलने को तैयार हूँ हालांकि वैसे मुझे अपना नाम काफी पसंद है।

2. आजकल के युग में स्त्री और पुरुष की पोशाक का अन्तर कम होता जा रहा है! मगर जब स्त्री और पुरुष का मौलिक अन्तर ही कम होता जा रहा है तो पोशाक को ही दोष क्यों दें।

3. उन दिनों अगर शहंशाह एक ताजमहल बनाने का हुक्म देते थे तो सिर्फ एक ही ताजमहल बनता था। इन दिनों आगर सरकार एक ताजमहल बनवाए तो चार बनेंगे।

प्रश्न

1) लेखक के अनुसार प्रचीन युग के लोगों की रुचि क्या थी?

2) मध्यकाल और आधुनिक काल में क्या अन्तर है?

3) इस लेख में प्रस्तुत व्यंग्य का परिचय दीजिए।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवीन सामाजिक व्यवस्था

डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन

(डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने दार्शनिक, प्रोफ़ेसर, उपकुलपति, राजदूत, उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति, शिक्षाशास्त्री तथा वक्ता के रूप में भारत के अंदर और बाहर नाम और सम्मान पाया है। वे अपने दर्शन में विश्वनागरिक होते हुए भी भारतीय संस्कृति के उपासक हैं। भारतीय दर्शन पर उनके ग्रंथ आधिकारिक माने जाते हैं। किसी भी कठिन विषय को सरल और सुचारु रूप से समझाने की उनकी दक्षता अनुपम है।

प्रस्तुत निबंध में डॉ. राधाकृष्णन ने यह समझाया है कि आधुनिक विश्वविद्यालय की शिक्षा का उद्देश्य क्या है। लोकतंत्र में शिक्षा का विशेष महत्त्व है। केवल दिमाग़ी घोड़ा दौड़ाना ही विश्वविद्यालय की शिक्षा नहीं है। एक अच्छी सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में विश्वविद्यालय की भूमिका मुख्य होती है।)

जहाँ तक मैं समझता हूँ विश्वविद्यालय का प्रधान कर्तव्य सामुदायिक जीवन विताने की सर्वोत्तम कला का आभास कराना ही है। आजकल की संकट-पूर्ण अवस्था में जब हम बर्बरता की ओर बढ़ रहे हैं तथा वातावरण खतरों से भरा दिखाई देता है यह कला कदाचित सबसे कठिन भी है। समाज में उथल-पुथल मची हुई है। जो दलित हैं, जिनके पास खाने को अन्न तथा रहने को घर नहीं, उनके सामने स्वाधीनता एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता की चर्चा चलाना उनका उपहास करना है। हमारी कठिनाइयों का सच्चा स्वरूप कैसा है, मैं इस संबंध में कोई निश्चित सिद्धांत आपके सामने नहीं रखना चाहता, पर क्या समाज- व्यवस्था के मूल में ही कुछ गड़बड़ नहीं? क्या मनुष्य के पारस्परिक संबंधों में ही एक अराजक अव्यवस्था घर नहीं किए है? गूँगों-बहरों के लिए, लंगड़ों- अंधों के लिए पर्याप्त संवेदना दिखाई

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देती है, पर गरीबों और बेकारों के प्रति कुछ भी नहीं, हालाँकि इनकी संख्या उनसे कहीं अधिक है। हम प्रकृति की उदासीनता की शिकायत तो करते हैं, पर मनुष्य की दुर्बलता को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं। हम प्रकृति से उस न्याय की आशा करते हैं जो उसके गुणों में है ही नहीं, पर स्वयं उसको मान कर चलना नहीं चाहते।

भारत के नए विधान में राजनीतिक अधिकारों के प्रयोग पर कुछ प्रतिबंध भी लगा दिये गए हैं जिससे लोग उनका मनमाना गैर-जिम्मेदाराना इस्तेमाल न कर सकें। आर्थिक क्षेत्र में प्रतिबंधों की आवश्यकता शायद और भी ज़्यादा है। अपनी वर्तमान सामाजिक परिस्थिति में आर्थिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए आर्थिक शक्ति को प्रतिबंधों से घेर रखना होगा जिससे सभ्य जीवन के लिए नितांत प्रयोजनीय सामान्य सुख के साधन सब को सुलभ बनाये जा सकें। वास्तविक स्वतंत्रता समाज-बंधन को तोड़कर व्यक्ति के बिल्कुल अलग हो जाने में नहीं हैं। वह तो बुद्धिपूर्वक सामाजिक शक्तियों को इस भाँति व्यवस्थित करने में है जिससे सभी का उचित विकास हो सके। यह व्यक्ति की स्वतंत्रता एवं सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता के बीच समझौता कर लेने की बात नहीं है। समाज में जो धुन लग गया है उससे हमारी रक्षा तभी हो सकती है जब हम एक नए दृष्टिकोण से संपूर्ण समाज में एकत्व भावना का आरोप करें।

इनका अर्थ यह नहीं कि हम राजनीतिक रहस्यवाद को ही पूरी तौर से स्वीकार कर लें और मनसा-वाचा-कर्मणा राज्य के ही दास बन जाएँ। संसार में ऐसे देश भी हैं जहाँ हर समाज कारागार बना दिया गया है और उसकी नींव स्वाधीनता के खण्डहर पर रखी गई है। दुनिया के कई भागों में स्वाधीनता की जो दशा है उसे देखकर एक बुद्धिमान फ्राँसीसी का वह कथन याद आता है जो उसने न्यूयार्क के बादशाह की स्वतंत्रता की मूर्ति के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिखाए जाने पर कहा था-"हम भी, अपने यहाँ, मरे हुओं के स्मारक बनाते हैं।" जो नई गुलामी आज प्रचलित हो रहा है उसमें मनुष्य को सोचने अथवा बोलने का साधारण अधिकार भी नहीं है। किसी सामाजिक व्यवस्था की सच्ची परख उसके नागरिकों की रचनात्मक शक्तियों के विकास से हो सकती है। हमें अपने अर्थिक जीवन को इस ढंग से संगठित करना चाहिए कि व्यक्ति की ज़िम्मेदारी बढ़ जाय, घटे नहीं। सच्चा समाज ग़ुलामों से नहीं आज़ाद, स्वाभिमानी, सुशिक्षित स्त्री-पुरुष से बनता है।

जिस प्रकार कोई भी अच्छी सामाजिक व्यवस्था ग़ुलामों से नहीं बन सकती, उसी प्रकार तमाम दुनिया के मित्रराष्ट्रों का संघ पराधीन राष्ट्रों के मिलने से नहीं बन सकता। जैसे सामाजिक स्वतंत्रता तथा बराबरी के अधिकार एक राष्ट्र के अधिकार है वैसे ही अन्तर्राष्ट्रीय स्वतंत्रता संसार में सुख और शांति बनाए रखने के लिए निहायत ज़रूरी है। आज़ाद क़ौमों का राष्ट्रसंघ शांति एवं स्वतंत्रता का मूल है। अभी तक यह केवल एक स्वप्न है , पर वह ऐसा स्वप्न जिसने बड़े -बड़े दिमाग़ों को उत्तेजना दी है बड़े-बड़े कामों को प्रोत्साहन दिया है और जो आगे भी उन्हें प्रोत्साहन देता रहेगा।

आधुनिक विश्वविद्यालय की शिक्षा बैठे-बैठे दिमागी घोड़ा दौड़ने का मज़ा लेने के लिए न्योता नहीं है। वह तो कुछ करने के लिए हुक्म है, ऐसा हुक्म है जो हमें बदल जाने को कहता है। असम्बद्ध अस्पष्ट विचारधारा, आलस्य तथा कायरता से होने वाले खतरनाक नतीजों को जानकर उनसे बचे रहने को कहता है। वहाँ हमें सामाजिक, अर्थिक एवं राजनीतिक समानता तथा भ्रातृ-भाव का ज्ञान और उसके अनुकूल कार्य करने के लिए उत्साह मिलना चाहिए। महान आदर्शों की प्राप्ति महान् साधनों से ही हो सकती है। लोकतंत्र बलात्कार नहीं करता, युक्ति देकर समझा- बुझाकर, राजी करके काम निकालता है। लोकतंत्री शासन में आपसी समझौता

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करके चलने की आदत बढ़ती है। वहाँ सभी यह मानते हैं कि युक्ति देकर ही किसी को अपनी बात मानने पर राजी किया जा सकता है। यदि हम प्रजातंत्रात्मक संस्थाओं को ठीक तरह से प्रयोग में लावे तो बिना ख़ून बहाये, बिना क्रांति के ही, हम वर्तमान अवस्था में मौलिक परिवर्तन कर सकते हैं। लोकतंत्र विशिष्ट जनशासन बनकर ही अपनी रक्षा कर सकता है। उसके नेताओं को दोषरहित तथा स्वतंत्र-प्रकृति का होना चाहिए। उन्हें बुद्धिमान् तथा सत्य-भक्त होना चाहिए। यदि चतुर तथा सिद्धांत-शून्य राजनीतिक जनता को उभारें और उन्हें अपने ही स्वार्थ के लिए प्रयोग करें तो यह प्राकृतिक जन-शासन होगा, लोकतंत्र यह नहीं। लोकतंत्र यह मानकर चलता है कि साधारण मनुष्यों को अपने हित का, अपनी भलाई-बुराई का, इतना अच्छा ज्ञान होता है कि वे दूसरों की भलाई चाहते हैं। शिक्षित कहलाने वाले लोगों में भी ऐसे लोगों की संख्या अपेक्षाकृत कम है जो बिना बाह्य नियंत्रण को स्वीकार किए स्वतंत्र रूप से विचार कर सकते हैं। अतएव यह बहुत ज़रूरी है कि हम नेताओं को चुनते समय बुद्धिमत्ता तथा सावधानी से काम लें।

जनतंत्रात्मक संस्थाएँ जब एक बार अपनी नीति बना लेती हैं तो उन्हें कार्यान्वित करने के लिए विशेषज्ञों के ऊपर छोड़ देना चाहिए। सभी प्रकार का शासन विशेषज्ञों का काम है। साधारण लोगों पर शासन-भार छोड़ देना कुछ वैसा ही होगा जैसे किसी स्कूल का इंतज़ाम विद्यार्थियों पर छोड़ दिया जाय अथवा रेलगाड़ी चलाने का भार मुसाफ़िरों को सौंप दिया जाय।

भारतीय विश्वविद्यालय के स्नातकों को शीघ्र ही ऐसे पदों पर काम करना पड़ेगा जिनमें दक्षता तथा उत्तरदायित्व की आवश्यकता होगी। कक्षा के भीतर, विवाद-सभा में, छात्रावास में, खेल के मैदान में, एक का दूसरे के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मन को प्रभावित करके, विचार एवं वाणी की पूर्ण आज़ादी देकर उन्हें ईमानदार, सहिष्णु तथा स्नेहशील बनाना होगा. उन्हें भलाई देखना तथा सर्वोत्तम मार्ग को चुनना सिखाना होगा। विचार-स्वातंत्र्य का विकास, उदारता तथा अपने से भिन्न सिद्धांत रखने वाले लोगों की बातों को समझने की शक्ति का उत्पादन विश्वविद्यालय में ही संभव हो सकता है। स्पिनोजा का कथन है - "मैंने बहुत परिश्रम करके बहुत सजगता के साथ मनुष्यों के कामों को समझना सीखा है, उनका मज़ाक उड़ाना, उन पर खेद प्रकट करना अथवा उनसे घृणा करना नहीं।" विश्वविद्यालय के छात्रों से इस बात की आशा की जाती है कि आत्मसंयम को बिना खोए, धर्मांध पुरुप की असहिष्णुता को बिना अपनाए वे घटनाओं अथवा सिद्धांतों को देख तथा समझ सकें। सामाजिक कुरीतियाँ, सांप्रदायिक झगड़े, ग़रीबी तथा बेकारी, आर्थिक एवं राजनैतिक कामों में बढ़े हुए नियंत्रण आदि के कारण हमारे देश की जो अवस्था आज है, उसमें बुद्धिमान, साहसी तथा आत्म-त्यागी नवयुवकों के लिए काम करने को काफ़ी अवसर मिलेंगे। देश की सेवा करने में, सामाजिक न्याय, शुद्ध राजनीति तथा स्त्री-पुरुपों में उचित संबंध स्थापित करने में उन्हें पूरी आज़ादी होगी। आशा है कि वे इस सत्य को सदा याद रखेंगे कि असफलता में धैर्य धारण करने से हमारी हानि कभी नहीं हो सकती; हाँ, धैर्य खो देने से उसका खतरा ज़रूरी है।

कठिन शब्दार्थ

हालाँकि- यद्यपि

गैर- जिम्मेदाराना- irresponsible बिना- उत्तरदायित्व के

जनतंत्रात्मक संस्था- Democratic institution

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1) जो दलित हैं, जिनके पास खाने को अन्न तथा रहने को घर नहीं, उनके सामने राजनैतिक स्वाधीनता एवं साँस्कृतिक स्वतंत्रता की चर्चा चलाना उनका उपहास करना है।

2) हम प्रकृति की उदासीनता की शिकायत तो करते हैं, पर मनुष्य की दुर्बलता को चुपचाप स्वीकार कर लेते हैं।

3) सच्चा समाज गुलामों से नहीं; आज़ाद, स्वाभिमानी, सुशिक्षित स्त्री-पुरुषों से बनता है।

4) आधुनिक विश्वविद्यालय की शिक्षा बैठें-बैठे दिमागी घोड़ा दौड़ाने का मज़ा लेने के लिए न्योता नहीं है। वह तो कुछ करने के लिए हुक्म हैं, ऐसा हुक्म है जो हमें बदल जाने को कहता है।

5) साधारण लोगों पर शासन-भार छोड़ देना कुछ वैसा ही होगा जैसे किसी स्कूल का इंतज़ाम विद्यार्थियों को सौंप दिया जाय।

6) मैं ने बहुत परिश्रम करके बहुत सजगता के साथ मनुष्यों के कामों को समझना सीखा है। उनका मज़ाक उड़ाना, उन पर खेद प्रकट करना अथवा उनसे घृणा करना नहीं।

प्रश्न

1) भारत के नए विधान में राजनीतिक अधिकारों के प्रयोग पर क्या क्या प्रतिबन्ध लगा दिये गए हैं ?

2) आधुनिक विश्वविद्यालय की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य समझाइए?

3) विश्वविद्यालय के छात्रों से किस बात की आशा की जाती है?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जेल में विवाह

यशपाल

(साहित्यकार के रूप में यशपाल का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है। आप प्रगतिशील विचारधारा के लेखक हैं। आप स्वतंत्रता संग्राम में बहुत बड़े क्रान्तिकारी नेता थे। 'दादा कामरेड', 'देशद्रोही', 'झूठा सच' आदि इनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'अभिशाप', 'वो दुनिया', 'पिंजरे की उड़ान' आदि कहानी-संग्रह हैं। 'सिंहावलोकन' में इनके संस्मरण प्रकाशित हैं। 'जेल में विवाह' शीर्षक प्रस्तुत संस्मरण 'सिंहावलोकन' के तीसरे भाग से उद्धृत है।

इस संस्मरण में यशपाल ने रोचक ढंग से अपने जेल जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना का वर्णन किया है। उनका विवाह प्रकाशवती कपूर के साथ जेल के अंदर ही हुआ। इस घटना से जुड़ी मज़ेदार घटनाओं का वर्णन काफ़ी दिलचस्प है।)

एक दिन बारिक बंद हो जाने के बाद मेजर मल्होत्रा अकस्मात निरीक्षण के तौर पर हमारी बारिक की ओर चले आए। जेलर विलियम्स साथ नहीं था। जेल के दो शरीर रक्षक जमादार ही साथ थे। अंग्रेज़ी में हाल-चाल पूछ कर पंजाबी में बोले 'यह तो बताओ प्रकाशवती कपूर कौन है? तुम जानते हो?'

'कहिए क्या बात है'? मैंने उल्टे प्रश्न किया।

मेजर बोले 'अभी किसी से ज़िक्र करने की ज़रूरी नहीं है। मिस प्रकाशवती कपूर ने डिप्टी कमिश्नर की मार्फ़त दरखास्त दी है कि वह तुमसे जेल में ही विवाह करना चाहती है। कहते- कहते वे भावुकता में आ गए, मैं यह सोचता रहा कि तुम्हें तो अभी दस-ग्यारह साल जेल में रहना है,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवान करे तुम छूट जाओ तो अच्छा ही है पर इस लड़की का त्याग देखो। त्याग और धर्म की ऐसी भावना हिंदू नारी के अतिरिक्त संसार में कहीं संभव नहीं हैं। मैं मानता हूँ कि तुम भी असाधारण देशभक्त और वीर आदमी हो। तुमने अपना जीवन देश के लिए बलिदान किया है। तुम्हारी गिरफ़्तारी के समय मैं बड़े ध्यान से पत्रों में सब समाचार पढ़ता रहता था। मैं नेहरू परिवार के लोगों, विजयलक्ष्मी और श्यामकुमारी को भी जानता हूँ परंतु मैं सोचता हूँ इस लड़की को तुमसे शादी करने से मिलेगा क्या? उसका तो यह असाधारण त्याग आदर्श है। हिंदू धर्म और हिंदुस्तान आज भी जो मर नहीं गया तो ऐसी ही देवियों के धर्म और आचारबल से। मुझे तो यही संतोष है कि मुझे ऐसी देवी के दर्शन करने का अवसर मिलेगा।'. इस बात का मैं क्या उत्तर देता।

अगले दिन डि. मजिस्ट्रेट के यहाँ से आया सरकारी पत्र मुझे दिखाया गया। लाहौर निवासी मिस प्रकाशवती कपूर बरेली केंद्रीय जेल में बंद आतंकवादी कैदी यशपाल से विवाह करना चाहती है। कैदी यशपाल विवाह करना चाहता है या नहीं? मैं ने स्वीकृति लिख दी। विवाह के लिए सात अगस्त तारीख निश्चित हो जाने की सूचना मुझे दे दी गई।

कुछ दिन रमेश गुप्त बदली होकर बरेली जेल में आ गया था। उसे बड़ा उत्साह अनुभव हो रहा था कि भैया की शादी हो रही है। जेल में जो भी सुनता हैरान होता कि कैदी की शादी हो रही है। ऐसा अभी तक देश की किसी भी जेल में सुना भी नहीं गया था। कुछ लोगों का अनुमान था शादी हो रही है तो कुछ दिन घर हो आने की छुट्टी भी मिल सकेगी।

विवाह के लिए निश्चित तारीख के दिन मेरे लिए आठ बजे के लगभग दफ़्तर से बुलावा आया। कारण तो पहले से मालूम था। जेल से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिले सफ़ेद दुसुती के कोट-पैंट पहले से धुलाकर इस्त्रो कराकर रखे हुए थे। उन्हें पहन कर चल दिया। शादी के लिए डिप्टी कमिश्नर की अदालत में जाना था। दफ़्तर में पहुँचने पर आदेश मिला कि बेड़ियाँ पहन लूँ।

`क्या' मैंने विस्मय प्रकट किया।

`जेल के बाहर जा रहे हो। ऐसी अवस्था में बेड़ियाँ पहन जाती हैं'। उत्तर मिला।

पर मैं तो शादी के लिए जा रहा हूँ। शादी बेड़ियाँ पहन कर कराई जाती है। बेड़ियाँ पहन कर शादी के लिए मैं नहीं जाऊँगा। शादी हो या न हो।

मुझे आदालत में ले जाने के लिए सिपाही लेकर आया हुआ सबइन्सपेक्टर मुझे बेड़ियाँ पहनाए बिना बाहर ले जाने की जोखिम उठाने के लिए तैयार नहीं था।

जेल सुपरिन्टेंडेन्ट मेजर मलहोत्रा परेशानी में पड़ गये। उसने पुलिस सुपरिन्टेंडेन्ट को फ़ोन किया कि पुलिस गार्ड कैदी को बेड़ियाँ पहनाए बिना आदालत ले जाने के लिए तैयार नहीं है। पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट ने भी मुझे बिना बेड़ियाँ पहनाए जेल से बाहर ले जाने की ज़िम्मेदारी लेना स्वीकार नहीं किया।

मैं ने शादी के लिए बेड़ियाँ पहनने से इन्कार कर दिया। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट को टेलिफ़ोन करके कठिन परिस्थिति की सूचना दी।

डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट मि. पैडले संकट में पड़ गए। उनके पत्र के आधार पर प्रकाशवती और मेरी माता शादी के लिए दो और गवाहों को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेकर डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की आदालत में पहुँची हुई थीं। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट ने मेजर मल्होत्रा को उत्तर दिया, पुलिस सुपरिन्टेंन्डेंट और कैदी दोनों की ही बात ठीक है। मैं दुल्हन को लेकर जेल में आ रहा हूँ। वहाँ ही विवाह होगा।

अवसरवश उस दिन बरेली में एक और संकट था। किसी कारण ताँगों इक्कों की हड़ताल थी उन दिनों। शहर कांग्रेस के प्रधान संतसिंह ने मेरी माता, प्रकाशवती और उनके साथ आए हिंदुस्तान टाइम्स प्रेस के मैनेजर देवीप्रसाद जी शर्मा और श्रीकृष्ण पुरी को डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की अदालत में तो पहुँचा दिया था। अब उन्हें जेल तक पहुँचाने के लिए सवारी का प्रबंध उनके बस की बात न थी। मि.पैंडले ने इसका भी उपाय किया था। माँ और प्रकाशवती को तो वे अपनी कार में ले आए। शर्मा जी और सूरी को भी किसी भद्र पुरुष की गाड़ी मिल गई। प्रकाशवती और माता जी के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की गाड़ी में उसके साथ ही आने से एक गालतफ़हमी पैदा हो गयी। वह बात ज़रा ठहर कर।

मि. पैंडले ने आज्ञा दी कि विवाह के अवसर के लिए जेल के दफ़्तर को अदालत मान लिया जाए। सिविल मैरेज या अदालती विवाह की कार्यवाही शुरू हुई। वर और वधू को जो-जो प्रतिज्ञाएँ करनी पड़ती हैं, हम लोगों ने कीं। पुरोहित के रूप में डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट के प्रश्न के उत्तर में प्रकाशवती ने अपने आप को सनातन धर्मी हिंदू बता दिया परंतु मैंने अपना धर्म बताया, `रेशनलिज्म'। हिंदी में इस शब्द का अनुवाद बुद्धिवाद ही हो सकता है।

मि.पैंडले बोले 'यह नया इज्म (वाद) तो कभी सुना नहीं। नास्तिक लिख दूँ या बौद्ध लिख दूँ।' 'नहीं जो मैं कहता हूँ वही लिखिए' - मैंने

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आग्रह किया।

साहब ने चिढ़ कर वही लिख दिया और उन्होंने कानूनी अदालती फ़ीस सवा रुपया माँग ली। देवीप्रसाद शर्मा और सूरी ने प्रकाशवती की ओर से गवाही में हस्ताक्षर किए। मेरी ओर से गवाही में रमेशचन्द्र गुप्त और मेजर मल्होत्रा ने हस्ताक्षर किए। सूरी पाँच-छः सेर मिठाई भी ले आए थे। मिठाई भी बाँटी गई। जो काम जेल में कभी नहीं हुआ था, वह हो गया। विवाह की खुशी में मेजर मल्होत्रा ने मुझे माता जी, प्रकाशवती शर्मा और सूरी के साथ एक घंटे तक बातचीत करने का अवसर दे दिया। उसके बाद वे लोग जेल के बाहर और मैं भीतर की ओर चला गया।

विवाह के दूसरे-तीसरे दिन ही दूसरे हाते में रहने वाले सी क्लास के राजनैतिक और चौरीचौरा के मामले के बंदियों का एक पेन्सिल से लिखा पूरे ताव का गुप्त पत्र मिला। इस पत्र में उन्होंने अपने एक क्रान्तिकारी नेता के नैतिक पतन पर शोक प्रकट करके मुझसे क्रान्तिकारियों का नाम कलंकित न करने की अपील की थी। पत्र का अभिप्राय था आपने जेल से मुक्ति पाने के लिए अँग्रेज़ डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की बेटी से विवाह कर लिया है। बहुत से राजनैतिक कैदी तो सी क्लास में उम्र कैद काट रहे हैं। आप तो बी क्लास की सुविधाएँ पा रहे हैं। क्या आप इतना भी नहीं सह सकते इत्यादि-इत्यादि।

जेल के भिन्न भिन्न भागों और हातों में घूमने वाले कैदी जमादारों से सुना कि जेल में अफ़वाह थी, डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट साहब अपनी बेटी को साड़ी पहना कर मोटर में लाये और बी क्लास वाले साहब से (अर्थात मुझसे) विवाह कर गए। अब साहब यशपाल जेल से छूट जायेंगे। साहब और सरकार में सुलह हो गई है। इस भ्रांति या कल्पना का कारण टाँगा

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हड़ताल के कारण प्रकाशवती का डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की मोटर में आना ही था। पंजाबी लड़कियों का रंग यों भी अच्छा गोरा होता है तिस पर व्याह की तैयारी में कुछ पाउडर भी पोता ही होगा। प्रकाशवती अँग्रेज़ की बेटी समझ ली गई।

जेल में रोमांचकारी अफ़वाहें उड़ाने से क़ैदियों को संतोष मिलता है। जीवन में स्फूर्ति और वैचित्र्य अनुभव करने का यही तो एकमात्र साधन उनके हाथ में रहता है। पत्र लिखने वाले लोगों को जितनी भी सही बात बताई जा सकती थी, बता कर उसका भ्रम और आशंका दूर करने की चेष्टा की। जेल में पहली बार विवाह होना असाधारण नई बात थी इसलिए सभी अखबारों ने 'स्टेट्स मैन' आदि ने भी इस समाचार को महत्व देकर मोटे अक्षरों में प्रकाशित किया।

जेल में विवाह हो जाने के समाचार से, चाहे वह खुश्क दफ़्तरी ढंग से ही संपन्न हुआ हो सरकार की दृष्टि में जेल के वातावरण की रुद्र गंभीरता का आतंक कमज़ोर हो गया। जाँच-पड़ताल के लिए सरकार से कागज़ दौड़ने लगे कि जेल में यह नई बात क्यों और कैसे हो गई। मेजर मल्होत्रा ने एक रोज़ बताया कि उनसे पूछ-ताछ होने पर उसने निधड़क उत्तर दे दिया, विवाह डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की स्वीकृति और आज्ञा से हुआ है। जेल के जिस कमरे में विवाह संपन्न हुआ, वह कमरा उस समय डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट की आज्ञा से अदालत में परिणत कर दिया गया था और वह स्थान जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट के नियंत्रण में नहीं, डी.एम. के नियंत्रण में था। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाँ दर्शक और गवाह की स्थिति में मौजूद था। जेल मैनुअल में कैदियों के विवाह के संबंध में स्वीकृति अथवा निषेध का कोई उल्लेख नहीं है। जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ने निर्णय डी.एम.के हाथ में छोड़ दिया कि इस विषय में जेल सूपरिटेन्डेंन्ट का कोई दायित्व नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जेल में विवाह हो जाने की बात यहीं नहीं रह गई। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट पैंडले से भी जवाब माँगा गया कि जेल में कैदी के विवाह की स्वीकृति उन्होंने कैसे दे दी। ब्रिटिश अफ़सर भारतीय अफ़सरों की तरह दब्बू नहीं होते थे। पैंडले का उत्तर था जेल विधान अथवा परंपरा में कैदियों के विवाह या जेल में विवाह के संबंध में कहीं कोई निर्देश नहीं है। मिस प्रकाशवती ने विवाह के लिए दरख्वास्त दी। उसमें कोई गैरकानूनी बात नहीं थी। उसकी इच्छापूर्ति में बाधा डालने का मेरे पास कोई कारण नहीं था। इसलिए मैंने स्वीकृति देना ही उचित समझा। इतने पर भी विवाह की प्रतिक्रिया में आरंभ हुई हलचल समाप्त नहीं हो गई।

कुछ मास बाद उत्तर प्रदेश की सरकार के तत्कालीन गृह सदस्य (हां मेंवर) सर महाधिराजसिंह स्वराज्य मिलने के बाद महाराष्ट्र के गवर्नर बरेली सेंट्रल जेल का निरीक्षण करने आए। हमारी बारिक में भी पधारे। मेरा परिचय पाकर बोले 'तुम्हें जेल में रख कर कोई न कोई मुसीबत होती ही रहनी चाहिए। जेल में शादी करके तुम्हें क्या फ़ायदा हो गया। हमारे लिए एक समस्या ज़रूर खड़ी कर दी।' मैंने उत्तर दिया 'आप स्वयं देख रहे हैं कि मुझे कोई फ़ायदा नहीं हुआ। मैं तो आपकी सरकार के पिंजड़े में बंद हूँ। जो कुछ हुआ आपकी सरकार और आपके अफ़सरों की अनुमति से हुआ।'

महाराजसिंह बोले, 'हुआ यह कि हमें मैनुअल में एक और धारा बढ़ानी पड़ गई कि जेल में कैदियों का विवाह नहीं हो सकता।'

मैं मुस्करा दिया 'चलिए एक ऐसी बात हो गई जो कभी नहीं हुई थी और हो भी नहीं सकेगी। जेल में मेरे विषय में उस समय चाहे कोई लाभ न हुआ हो, यह घटना अँग्रेज़ी शासन की जाब्तेदारी का अच्छा उदाहरण बन गई।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कठिन शब्दार्थ

दरखास्त - petition
मुसीबत- परेशानी
सुलह-समझौता
खुश्क- रूखा
अफ़वाह - किंवदंती
जाव्तेदारी- नियम, कायदा, विधि

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1) हिंदू धर्म और हिंदुस्तान आज भी जो मर नहीं गया तो ऐसी ही देवियों के धर्म और आचारबल से। मुझे तो यही संतोष है कि मुझे ऐसी देवी के दर्शन करने का अवसर मिलेगा।

2) बहुत से राजनैतिक कैदी तो सी-क्लास में उम्र कैद काट रहे हैं। आप तो बी क्लास की सुविधाएँ पा रहे हैं। क्या आप उतना भी नहीं सह सकते?

3) जेल में रोमांचकारी अफ़वाहें उड़ाने से कैदियों को संतोष मिलता है। जीवन में स्फूर्ति और वैचित्र्य अनुभव करने का यही तो एकमात्र साधन उनके हाथ में रहता है।

प्रश्न

1) जेल में विवाह का आयोजन क्यों किया गया?

2) जेल में हुआ विवाह का वर्णन कीजिए।

3) अँग्रेज़ी शासन की जाव्तेदारी का परिचय कैसे मिलता है?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भक्त त्यागराज

श्री राजेंद्र सिंह गौड़

(श्री राजेंद्र सिंह गौड़ हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध जीवनी लेखक हैं। आपकी रचनाओं में 'संत कबीर', 'आधुनिक कवियों की काव्य-साधना', 'हमारे कवि हमारे नाटककार', 'दक्षिण की विभूतियाँ' आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत निबंध में लेखक ने भक्तवर त्यागराज की संगीत साधना और भक्ति साधना पर प्रकाश डाला है। त्यागराज कर्नाटक संगीत की महान विभूति हैं। राम के इस परम भक्त ने विशुद्ध संगीत द्वारा ब्रह्म-साक्षात्कार किया। यह नाद-योग भारतीय संस्कृति को त्यागराज की सबसे बड़ी देन है।)

राम के दो भक्त अमर हैं। उनमें से एक हैं उत्तर भारत के गोस्वामी तुलसीदास और दूसरे हैं दक्षिण भारत के अनन्य भक्त त्यागराज। जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास की रचना 'रामचरितमानस' का कीर्तन हिंदी जानने वाले घरों में होता है उसी प्रकार भक्त त्यागराज के भजन तेलुगू जानने वाले घरों में गाए जाते हैं और उनकी रचनाओं का सब लोग आदर करते हैं।

भक्त त्यागराज एक पहुँचे हुए भक्त ही नहीं एक कुशल नाद-योगी और युग-प्रवर्तक संगीतकार भी थे। राम-भक्ति और संगीत का जैसा सुंदर समन्वय उन्होंने अपने भजनों में किया वैसा गोस्वामीजी भी न कर सके। कृष्ण-भक्त सूरदास उनकी जोड़ी के कवि कहे जा सकते हैं, परंतु संगीत के क्षेत्र में उन्होंने कोई क्रांति नहीं की। संत त्यागराज भारत के ही नहीं, विश्व के पहले संगीतज्ञ हैं जिन्होंने विशुद्ध संगीत द्वारा ब्रह्म-साक्षात्कार किया। यह नाद-योग भारतीय संस्कृति को त्यागराज की सबसे बड़ी देन है। वे कर्नाटक संगीत के सर्वोच्च गायक और संगीत - स्रष्टा थे। तमिलनाडु के

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कावेरी के तट पर तंजाऊर में उन्होंने अपने संगीत से ऐसा अमृत-रस प्रवाहित किया था जो आज तक सारे दक्षिण भारत की जनता को शुभ प्रेरणा और लोकोत्तर आनंद से आप्लावित कर रहा है। कर्नाटक संगीत की किसी भी सभा में आप जाइए, आधे से अधिक गाने आपको भक्त त्यागराज के ही सुनने को मिलेंगे।

ऐसे भक्त-कवि त्यागराज का जन्म तंजाऊर ज़िले के तिरुवारुर नामक शिव स्थान में 5 मई, सन् 1759 ई. को दोपहर के समय हुआ था। उनके पूर्वज आंध्रप्रदेश के कर्नूल ज़िले के काकर्ल नामक गाँव के निवासी थे। वहाँ से पं. गिरिराज के पिता तीर्थ-यात्रा करने तिरुवाकर गए और वहीं वस गए। पं गिरिराज के पुत्र का नाम था रामब्रह्मम्। यही रामब्रह्मम् भक्त त्यागराज के पिता थे।

पं. रामब्रह्मम् एक बड़े राम-भक्त और अपने समय के एक प्रसिद्ध गायक थे। उनका जीवन सीधा- सादा था और उनके विचार अत्यंत पवित्र थे। उनके समान ही उनकी पत्नी शान्तादेवी भी अत्यंत सरल-स्वभाव की थीं और अपना अधिकांश समय पूजा-पाठ में विताया करती थीं। उनके तीन पुत्र थे। त्यागराज उनमें से सवसे छोटे थे। अन्य वालकों की अपेक्षा त्यागराज पर माता-पिता का अधिक स्नेह था। पहले उनका परिवार तिरुवारुर में रहता था, किंतु वाद को वह तिरुवैयार चला गया और वहीं वस गया।

तिरुवैयार में तिरुवारुर की अपेक्षा शिक्षा की अधिक सुविधाएँ थीं। इसलिए तिरुवैयार में ही वालक त्यागराज की शिक्षा का श्रीगणेश हुआ। वालक त्यागराज पर आरंभ से ही उनके माता-पिता के पवित्र व्यक्तित्व का प्रभाव था। वचपन में ही उन्होंने अपने माता-पिता के अनेक भजनों को

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कंठस्थ कर लिया था जिन्हें प्रार्थना के समय वे मधुर कंठ से गाया करते थे। तिरुवैयार में एक निःशुल्क संस्कृत पाठशाला थी। उस पाठशाला में भी वे पढ़ने जाया करते थे। उस पाठशाला में उन्होंने चार वर्ष तक संस्कृत साहित्य और उसके धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन किया। उसके साथ ही अपनी मातृभाषा तेलुगू का भी वे अध्ययन करते रहे। इस प्रकार तेलुगू और संस्कृत पर अधिकार प्राप्त कर उन्होंने भजन बनाने का अभ्यास किया।

उस समय तक संगीत-कला से त्यागराज का विशेष परिचय नहीं था। भजनों की रचना करते समय उन्हें इसकी आवश्यकता का अनुभव हुआ। यह देखकर उनके पिता ने उन्हें शोंठिवेंकट रमणय्या के पास भेजा। शोंठिवेंकट रमणय्या तंजाऊर के राजा अच्तुप्पा नायक के दरबार के प्रसिद्ध संगीतज्ञ थे और त्यागराज के घर के निकट ही रहते थे। वे वीणा-वादन के आचार्य थे। त्यागराज ने उन्हीं के शिष्यत्व में रहकर संगीत का अभ्यास किया। शोंठिवेंकट रमणय्या त्यागराज की संगीत-प्रतिभा से बड़े प्रभावित हुए और उन्होंने बड़े परिश्रम और स्नेह से त्यागराज को संगीत- शिक्षा दी, थोड़े ही दिनों में त्यागराज संगीत-कला में मर्मज्ञ हो गए।

संगीत-कला का ज्ञान प्राप्त कर त्यागराज ने घर पर उसका अभ्यास किया। उस समय उनके तीन ही काम थे राम की प्रतिमा का पूजन करना, राम भक्ति पर आधारित भजनों की रचना करना और संगीत का अभ्यास करना। इन तीनों कामों को उन्होंने एक ही साथ साधने का अभ्यास किया। संगीत के माध्यम से ही वे राम की प्रतिमा का पूजन करते थे और संगीत के माध्यम से ही भजनों की रचना किया करते थे। इस प्रकार उनका जीवन संगीतमय हो गया था। उन्होंने खोज-खोज कर संगीत-शास्त्र की पुस्तकों का अध्ययन किया। कहा जाता है कि एक दिन उन्होंने संगीत के आदि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आचार्य नारद का ध्यान किया। नारद की कृपा से उन्हें उनकी रचना 'स्वरार्णवम्' प्राप्त हो गई। नाद-योग की इस रचना से त्यागराज को बड़ी सहायता मिली और वे थोड़े ही समय में संगीत-कला के और उसके विज्ञान के आचार्य हो गए। उसके वाद उन्होंने 96 करोड़ राम-नाम का जप आरंभ किया। उस जप ने उनकी संगीत-कला को और भी विकसित कर दिया और वे चारों ओर एक संगीतज्ञ और भक्त के रूप में प्रसिद्ध हो गए।

त्यागराज का जीवन आरंभ से ही भक्तों का जीवन था। वह नित्य 4 वजे प्रातः काल उठकर कावेरी में स्नान करने जाते थे और फिर घर आकर पूजा-पाठ करते थे। दिन-भर वेदों और धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन करने के वाद सायंकाल वे मंदिर में जाते थे और वहाँ वड़ी रात गए तक भजन-कीर्तन किया करते थे। सप्ताह में दो वार वे चावल की भिक्षा माँगते थे। इसी भिक्षा पर वे जीवन निर्वाह करते थे। प्रत्येक एकादशी के दिन वे निराहार व्रत रखते थे। उस दिन उनका सारा समय राम के भजन-कीर्तन में वीतता था। उनका संपूर्ण जीवन राममय था। उठते-वैठते, चलते-फिरते, खाते- पीते, नहाते-धोते, सोते-जागते हर समय वे राम में ही लीन रहते थे। राम के सामने ही वे अपना दुखड़ा रोते थे, राम से ही वे अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति की प्रार्थना करते थे, राम के ही सामने वे अपनी भूलें स्वीकार करते थे और किसी दुष्ट के सताने पर राम से ही वे अपनी सुरक्षा की याचना करते थे। ऐसा था उनका राममय जीवन।

संसार में शत्रु-मित्र सवके होते हैं। त्यागराज इस नियम के अपवाद नहीं थे। उनका शत्रु और कोई नहीं, उनका ही वड़ा भाई था। वह त्यागराज को ढोंगी, आलसी, कपटी और पागल समझता था। वह त्यागराज को गालियाँ भी देता था और चारों ओर उनकी निंदा किया करता था। जव तक पं.रामब्रह्मम् जीवित रहे, त्यागराज को वड़े भाई के कटु व्यवहार से

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष कष्ट नहीं हुआ। पं. रामब्रह्मम् जानते थे कि उनकी मृत्यु के पश्चात उस घर में त्यागराज का रहना असंभव है। इसलिए उन्होंने मरते समय त्यागराज को अपने निकट बुलाकर बड़े प्रेम से कहा, मेरे बेटे त्यागू। तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ भी भौतिक संपत्ति नहीं है। लेकिन संसार की समस्त भौतिक संपत्ति के स्रोत राम की मूर्ति को मैं तुम्हें देता हूँ। इन्हीं राम का कीर्तन करना, इन्हीं राम की कृपा में विश्वास करना और इन्हीं राम की सेवा में रहना। त्यागराज ने अपने पिता की मृत्यु के बाद इन्हीं आदेशों का पालन किया। घर का बँटवारा होने पर उन्होंने केवल राममूर्ति लेकर अपना भाग अपने दोनों भाइयों को दे दिया। किंतु इतने पर भी उन दुष्टों का जी नहीं भरा। एक दिन एक भाई ने राम की वह मूर्ति कावेरी में फेंक दी। त्यागराज बिलख-बिलखकर रोने लगे। यह देखकर राम की मूर्ति कावेरी से बाहर निकल आई। त्यागराज ने इस मूर्ति को अपनी छाती से लगा लिया। और फिर कभी अलग नहीं किया। ऐसी थी उनकी राम-भक्ति और उस निर्जीव मूर्ति पर उनकी आस्था।

त्यागराज गृहस्थ थे। उनके दो विवाह हुए थे। पहली पत्नी के मरने के बाद उन्होंने दूसरा विवाह किया। उनकी दूसरी पत्नी का नाम कमलाम्बा था। इस विवाह से एक पुत्री थी जिसका नाम सीतालक्ष्मी था। सीतालक्ष्मी का विवाह कुप्पूस्वामी नाम के एक विद्वान ब्राह्मण युवक के साथ हुआ था। विवाह के अवसर पर कुप्पूस्वामी के सामने भेंट की सामग्री का ढेर लग गया था, लेकिन राम के एक सुंदर चित्र के अतिरिक्त उन्होंने उसमें से कुछ भी स्वीकार नहीं किया। कालांतर में सीतालक्ष्मी ने एक पुत्र को जन्म दिया, किंतु वह भी अपने तेरहवें वर्ष में चल बसा। इस प्रकार त्यागराज का परिवार समाप्त हो गया। शेष रह गए, भजन, जो आज भी उनकी याद दिलवाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यागराज का व्यक्तित्व असाधारण था। देखने में वे बहुत सुंदर लगते थे। लंबा-दुबला-पतला गोरा शरीर, भरा हुआ तेजस्वी चेहरा, चौड़ी छाती, उस पर गले से लटकती हुई तुलसी की माला, प्रशस्त ललाट, जिस पर चंदन का टीका, भीतरी तेज से चमकती आँखें, बाएँ हाथ में तंबूरा और दाहिने हाथ में करताल-ऐसी थी उनकी वेश-भूषा। इस वेश-भूषा में उन्हें जो देखता था वही उनके सामने झुक जाता था। कहा जाता है कि उन्होंने कांचिपुरम् के उपनिषदस्वामी नाम के एक राम-भक्त से श्रीराम के तारक मंत्र का उपदेश लिया था और उसी मंत्र का उन्होंने 69 करोड़ जप किया था। वे अपने समय के अद्वितीय राम भक्त थे। उनकी कीर्ति बड़ी दूर-दूर तक फैली थी और उनका दर्शन करने के लिए लोगों की भीड़ लगी रहती थी। बड़े-बड़े राजा-महाराजा उनके दर्शन करने और उनका संगीत सुनने के लिए लालायित रहते थे।

उन दिनों दक्षिण भारत में अँग्रेज़ों का ज़ोर बढ़ रहा था। जीवन और कला के क्षेत्र उनके व्यक्तित्व से प्रभावित हो रहे थे। श्रृंगापट्टनम में टीपू सुल्तान मारा जा चुका था और कर्नाटक प्रदेश पर यूनियन जैक फहरा रहा था। तंजाऊर के राजा सरफोजी की सत्ता समाप्त हो चुकी थी। और उसे ईस्ट इंडिया कंपनी की ओर से पेन्शन मिलती थी। फिर भी वह नाम का भूखा था। उसने त्यागराज को अपने दरबार में बुलाने के लिए एक दूत भेजा और दरबार में सबके सामने एक ऐसा भजन गाने के लिए कहला भेजा जिसमें उसका यश-वर्णन किया गया हो। उसके उपलक्ष्य में राजा ने त्यागराज को विपुल संपत्ति देने का प्रलोभन दिया। त्यागराज पूरे त्यागी थे, वे अपनी कुटी छोड़कर नहीं गए। जो राजदूत उन्हें बुलाने आया था उसकी उपस्थिति में उन्होंने राम की प्रतिमा के सामने कल्याणी राग में एक भजन गाया जिसका अर्थ था, हज़ारों रुपयों के स्वामी होने पर मुट्ठी भर

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्न खा सकते हो, हज़ार वस्त्र होने पर भी एक ही पहन सकते हो, सब जगह राज्य होने पर भी तीन हाथ जगह पर ही सो सकते हो, नदी में पानी छलकते रहने पर भी एक लोटा पानी ही ले सकते हो - फिर धन जोड़ने से क्या सुख मिलता है। परमात्मा में ध्यान लगाओ।

राजदूत संत त्यागराज को प्रणाम कर राजा के पास गया। राजा के क्रोध का पार चढ़ गया। उसने त्यागराज को पकड़ने के लिए अपने सिपाहियों को आज्ञा दी, परंतु आज्ञा देते ही उसके हृदय में ऐसी पीड़ा होने लगी कि वह छटपटा उठा। तब उसे अपनी मूर्खता का आभास हुआ और उसने त्यागराज के पास जा कर क्षमा - याचना की। त्रावनकोर के राजा ने भी उन्हें बुलाया, परंतु उसके दरबार में भी वे नहीं गए। त्रावनकोर के राजा की उनके प्रति अगाध श्रद्धा थी। वे त्यागराज को राजाओं का राजा और संगीतज्ञों का सम्राट कहते थे।

त्यागराज कवियों, संगीतज्ञों और भगवान् के भक्तों का बड़ा आदर करते थे। गोपालकृष्ण भारती के भजनों और गोविंद मुरार की संगीतकला की वे बहुत प्रशंसा करते थे। कांचिपुरम, मद्रास, तिरुपती, श्रीरंगम, मदुराई और रामेश्वरम की उन्होंने यात्रा की थी। उनके अनेक शिष्य थे, जो उनकी पालकी ढोने में अपना गौरव समझते थे। लोग उन पर स्वर्ण की वर्षा करते थे, लेकिन वे यही कहते थे - मैं तो राम का भिखारी हूँ। पैसे से मेरा कोई संबंध नहीं है।

त्यागराज 88 वर्ष तक जीवित रहे और अपने जीवन के अंतिम क्षण तक वे भजन-कीर्तन करते रहे। जून 1847 ई. में उन्होंने सन्यास लिया और इसके 10 दिन बाद ही उन्होंने बैठे ही बैठे अपने शिष्यों की उपस्थिति में अपनी जीवन-लीला समाप्त की। उनकी समाधि तिरुवैयार में है और

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस पर मंदिर वना हुआ है। यहाँ प्रतिवर्ष उनके निर्वाण - दिवस पर आराधना - महोत्सव मनाया जाता है। इस आराधना - महोत्सव में संगीतांजलि अर्पित करना दक्षिण का हर छोटा-वड़ा गायक और वादक अपना कर्तव्य समझता है।

कठिन शब्दार्थ

श्रीगणेश करना - प्रारंभ करना

विलखना - विलाप करना, रोना

चल वसना - मर जाना

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1. मेरे वेटे त्यागु। तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ भी भौतिक संपत्ति नहीं है। लेकिन संसार की समस्त भौतिक संपत्ति के स्रोत राम की मूर्ति को मैं तुम्हें देता हूँ। इन्हीं राम का कीर्तन करना, इन्हीं राम की कृपा में विश्वास करना और इन्हीं राम की सेवा में रहना।

2. हज़ारों रुपयों के स्वामी होने पर भी मुट्ठी भर अन्न खा सकते हो, हज़ार वस्त्र होने पर भी एक ही पहन सकते हो, सव जगह राज्य होने पर भी तीन हाथ जगह पर सो सकते हो, नदी में पानी छलकते रहने पर भी एक लोटा पानी ही ले सकते हो - फिर धन जोडने से क्या सुख मिलता है। परमात्मा में ध्यान लगाओ।

प्रश्न

1) त्यागराज की जीवनी संक्षेप में लिखिए।

2) संगीतज्ञ के रूप में त्यागराज का परिचय दीजिए।

3) त्यागराज के व्यक्तित्व की विशेषताएँ क्या क्या हैं?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बढ़ते शोर का गहराता संकट

राजेन्द्रकुमार राय

रवीन्द्रकुमार वर्मा

(राजेन्द्रकुमार राय तथा रवीन्द्रकुमार वर्मा ने हिंदी में विज्ञान संबंधी अनेक उपयोगी निबंध लिखे हैं। प्रस्तुत निबंध पर्यावरण संबंधी एक लेख है। हमारा पर्यावरण निरंतर प्रदूषित होता जा रहा है। इसके कारणों में मुख्य है शोर की बढ़ती मात्रा। शोर की अधिकता अनेक रोगों का कारण बनती है। लेखकों ने ध्वनि प्रदूषण की हानियों को समझाते हुए उसके नियंत्रण के उपायों का निर्देश दिया है। प्रदूषण की बहुआयामी समस्या का एक महत्वपूर्ण आयाम शोर प्रदूषण है। यह बात शायद बहुत कम लोग जानते हैं कि शोर प्रदूषण ज़हरीले रसायन से भी अधिक ख़तरनाक है। मशीनी युग से तोहफ़े में जो शोर हमें मिल रहा है, वह काफ़ी कष्टदायक और हानिकारक है। आज की वर्तमान औद्योगिक सभ्यता के फैलाव के साथ शोर की मात्रा दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इसीलिए यह चिंता का विषय बन गया है।)

शोर क्या है?

दैनिक जीवन में अपरिहार्य साधारण आवाज़ों से अधिक ऊँची आवाज़ें शोर कहलाती हैं। हम कह सकते हैं कि अनावश्यक, असुविधा-जनक और निरर्थक आवाज़ ही शोर प्रदूषण है। लेकिन डिस्को म्यूज़िक के शोर में नाचते हुए व्यक्तियों को यह शोर नहीं लगता, जबकि दूसरों के लिए यह आवाज़ प्रदूषण का काम करती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इससे पहले कि किसी ध्वनि को अवांछित कहा जाए, उसका एक मापदंड होना चाहिए। किसी ध्वनि को शेर का दर्जा देने के लिए निम्न मापदंड हो सकते हैं: ध्वनि से वातचीत में विघ्न, चिढ़, श्रवण शक्ति का ह्रास और कार्य-दक्षता में कमी। अधिकतर शोर को हम उसके मानव पर प्रभाव के ही परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। हालांकि शोर का किसी मशीन पर प्रभाव भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। उदारहणस्वरूप सघन ध्वनि - तरंगों से वायुयान में थकावट (फ़टीग) हो सकती है या वायुयान को दिशा - निर्देश देने वाले इलेक्ट्रानिक उपकरण में गड़वड़ी उत्पन्न हो सकती है।

किसी भी व्यक्ति पर शोर का प्रभाव इस वात पर निर्भर करता है कि ध्वनि का स्रोत क्या है, और उसकी तीव्रता कितनी है, शोर की तीव्रता को मापने की इकाई डेसीवल कहलाती है। डेसीवल को संक्षेप में `डी.वी.' कहते हैं। डेसीवल पैमाने पर शून्य वह स्तर है जहाँ से आवाज़ का सुनाई देना आरंभ होता है।

शोर और स्वास्थ्य

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने स्वास्थ्य की परिभाषा दी है - स्वास्थ्य शारीरिक, मानसिक और सामाजिक संतुष्टि की अवस्था है। यह केवल दुर्वलता और वीमारियों से मुक्त होना नहीं है। शोर इस संतुष्टि को प्रभावित करता है तथा स्वास्थ्य को कुप्रभावित करता है। साथ ही शोर आंतरिक कान को क्षति पहुँचा सकता है।

प्लूचिक (1962) ने 18 व्यक्तियों पर 100 से 120 डेसीवल की आंतरिक ध्वनि के अल्पकालीन प्रभाव का अध्ययन करने के वाद यह निष्कर्ष निकाला कि उच्च-तीव्रता की ध्वनि, त्वचा के दो भिन्न विंदुओं के वीच वैद्युत विभव और प्रतिरोध उत्पन्न कर सकती है। कैलिफ़ोर्निया

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्वविद्यालय (अमेरिका) के डा. नोवेल जॉस ने सवा दो लाख से भी अधिक नवजात शिशुओं पर परीक्षण करने के वाद पाया कि शांत स्थानों में रहने वाली महिलाओं की तुलना में शोरगुल के लगातार संपर्क में रहने वाली महिलाओं के नवजात शिशुओं में विकृतियाँ अधिक होती हैं।

सूडान (अफ्रीका) देश की एक जनजाति `मवान' पर किए गए अध्ययनों से एक महत्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आया है। अत्यंत शांत और कोलाहल विहीन वातावरण (न वंदूकें, न ही अन्य किसी तरह का शोर) में वे जीवन विताते हैं। वहाँ पर ध्वनि 35 डेसीवल के लगभग होती है। उन्हें कभी न तो हृदय रोग होते हैं और न रक्तचाप का कष्ट। वहाँ काफ़ी वड़ी उम्र के लोग भी साफ़ सुनते हैं। लेकिन जब मवानों को शोर के क्षेत्रों में रहना पड़ता है तो वे इन्हीं रोगों का तेज़ी से शिकार हो जाते हैं।

प्रकचन रक्तचाप (सिस्टोलिक ब्लड-प्रशेर) और अनुशिथिलन रक्तचाप (डाइस्टोलिक ब्लड-प्रेशर) में 95 डेसीवल के शोर से सामान्य दूरी रहने पर भी क्रमशः 7 मिलीमीटर तथा 3 मिलीमीटर रक्तचाप की वृद्धि पाई गई है।

मानव शरीर पर शोर के कुप्रभावों का वैज्ञानिक अध्ययन-

वैज्ञानिकों ने मानव शरीर पर शोर के कुप्रभावों का जो वैज्ञानिक अध्ययन किया है, वह काफ़ी चौंकाने वाला है। मानव मस्तिष्क की 12 नसों में से एक नस सुनने की होती है। इसे स्वर तंत्रिका कहते हैं। स्वर तंत्रिका के दो भाग होते हैं। कर्णवर्त तंत्रिका व प्रमाण तंत्रिका। इनमें कर्णवर्त तंत्रिका ध्वनि तरंगों को कान से मस्तिष्क तक पहुँचाती है। तेज़ शोर का परिणाम इस नस पर कभी-कभी इतना घातक होता है कि श्रवण सामर्थ्य थोड़ी या वहुत या पूर्णतया भी समाप्त हो सकती है। प्रायः अधिक ध्वनि का अभ्यस्त हो जाने पर धीमी आवाज़ों को सुनने की क्षमता कम हो जाती है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शोर प्रदूषण सिर्फ़ बहरेपन को ही न्योता नहीं देता, बेचैनी एवं मानसिक तनाव भी पैदा करता है, जिससे रक्तचाप की बीमारी हो सकती है। इससे व्यक्ति मानसिक तनाव, चिड़चिड़ाहट और झुंझलाहट की समस्या से ग्रस्त हो जाता है। रक्त में कोलेस्टेरोल की मात्रा बढ़ जाती है। स्नायु तंत्र पर शोर का प्रभाव हृदय, पाचन तंत्र के साथ अन्य तंत्रों पर भी पड़ता है। साथ ही वाहिनियों के संकुचन से हृदय रोग तथा अन्य बीमारियाँ शरीर में डेरा डाल लेती हैं। अधिक शोर के कारण नेत्र गोलक पर केंद्रित नहीं हो पाता। शोर का अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक और आर्थिक प्रभाव पड़ता है। शोर के कुछ प्रभाव परिस्थिति और सुनने वाले की मनोवृत्ति पर निर्भर हैं। इसलिए शोर के सहनीय स्तर के लिए आम मापदंड को निर्धारित करना असंभव है। लेकिन शोर के कुछ विशेष प्रभावों के लिए मापदंड निर्धारित किए गए हैं।

वाग्ध्वनि का प्राच्छादन

शोर वाग्ध्वनि या वांछित ध्वनि अश्रवणीय बना सकता है यदि उसकी आवृत्ति श्रेणी वाग्ध्वनि के बराबर है और वाग्ध्वनि से सघन है। अधिकतर वाग्ध्वनियों की कान के पास तीव्रता 65 डेसीबल होती है। घरों, उद्योगों और दफ़्तरों में उत्पन्न शोर के आवृत्ति घटक अधिक तीव्र और वाग्ध्वनि की आवृत्ति श्रेणी के बराबर होते हैं।

वाग्ध्वनि में विघ्न का स्तर

शोर के विरुद्ध लोग इस बात की शिकायत करते हैं कि यह व्यक्ति से व्यक्ति की बातचीत और रेडियो एवं टेलीफोन पर बातचीत या टेलीविजन

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की आवाज़ में विघ्न डालता है। वाग्ध्वनि में ध्वनि की मात्रा के निर्धारण के लिए ध्वनि दवाव स्तर का औसत लेते हैं। डेसीवल में यह औसत स्तर वाग्ध्वनि विघ्न स्तर कहलाता है।

श्रवण शक्ति का ह्रास

किसी भी तरह का तीव्र शोर मानव श्रवण प्रक्रिया को अस्थायी या स्थाई रूप से क्षति पहुँचा सकता है। श्रवण शक्ति ह्रास शुद्ध-ध्वनि श्रव्यतामापी से किया जाता है जिसमें शुद्ध ध्वनि तीव्रता को डेसीवल में मापते हैं। यह ध्वनि इतनी होती है कि शांत कमरे में प्रक्रिया की विभिन्न आवृतियों पर पुनरावृत्ति की जाती है। इस तरह प्राप्त परिमाण से ऑडिओग्राम वनता है जिसे 'श्रवण अवसीमा' कहते है। एक उम्र वर्ग की सामान्य श्रवण अवसीमा से किसी व्यक्ति विशेष की श्रवण अवसीमा की तुलना करने पर उस व्यक्ति का श्रवण ह्रास मालूम किया जा सकता है।

श्रवण ह्रास की मात्रा निम्न घटकों से प्रभावित होती है (1) शोर की आवृत्ति और तीव्रता (2) शोर की वैड चौड़ाई (3) एक दिन में शोर से प्रभावन समय तथा (4) प्रभावन दिनों का कुल वर्ष।

ध्वनि प्रभावन से हुए श्रवण ह्रास पर अनुसंधान से दो मापदंड प्राप्त किए गए हैं। एक मापदंड उन ध्वनियों पर लागू होता है जो शुद्ध हैं या उन ध्वनियों पर जिनकी अधिकतर ऊर्जा संकीर्ण क्रांतिक वैडों में होती है। क्रांतिक वैंड अधिकतर श्रव्य श्रेणी की ध्वनि आवृत्तियों में 100 सी पी एस चौड़ा होता है। दूसरा मापदंड चौड़े-वैंड के शोर पर लागू होता है।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थाई श्रवण ह्रास की परिभाषा है, "श्रवण अवसीमा में स्थाई परिवर्तन।" 80 डेसीबल के प्रभावन स्तर पर यह परिवर्तन नहीं होगा। लेकिन 85 डेसीबल पर यह परिवर्तन महत्वपूर्ण हो जाता है। 90 डेसीबल की सीमा पार करने पर शोर कानों के लिए खतरनाक होता है।

शोर नियंत्रण

ध्वनि प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारण कल कारख़ाने भी हैं। कारख़ानों में काम करने वाले मज़दूरों पर वहाँ के शोर का काफ़ी बुरा प्रभाव पड़ता है। मज़दूरों को यह शोर मानसिक तनाव के साथ स्नायुक्ता और उदर में विकार जैसी बीमारियों से ग्रस्त कर देता है।

प्रश्न यह है कि शोर की समस्या का समाधान क्या है। औद्योगिक प्रगति को रोका नहीं जा सकता। अगर ऐसे कल-कारख़ानों को बंद कर दिया जाए तो समाज को इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ेगी। देश के विकास और प्रगति की गति को बनाए रखने के लिए इनकी आवश्यकता का पूरा- पूरा औचित्य है। हमें इस समस्या को ऐसा समाधान निकालना है जो प्रगति की गति में बाधक न बने। कारखानों में काम करने वालों को इयर प्लग, इयर मफ़स, हेल्मेट आदि की सुविधाएँ देकर शोर के दुष्प्रभावों को कम किया जा सकता है।

शोर नियंत्रण श्रवण सुरक्षा कार्यक्रम में प्रथम और अनिवार्य कदम है। प्रदूषण की स्थिति को और अधिक नहीं बिगड़ने देना है तो बुनियादी कदम उठाने होंगे जैसा कि विश्व के कई देशों ने ध्वनि प्रदूषण हानियों को समझते हुए उठाया है। फ्रांस की सरकार ने तो अपनी पुलिस को यह

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिकार दे रखा है कि उन मोटर गाड़ियों/वाहनों को जब्त कर ले जो शोर प्रतिबंध कानून का उल्लंघन करते हैं।

अनुसन्धानों से पता चला है कि पर्यावरण में शोर की तीव्रता प्रत्येक दस वर्ष में दुगुनी होती जा रही है। विगत तीस वर्षों में शोर जिस रफ़्तार से बढ़ा है अगर उसी तरह बढ़ता रहा तो यह हमारे लिए घातक सिद्ध होगा। अगर इस आधुनिक युग में शोर प्रदूषण को सख्ती से नहीं रोका गया तो अगले बीस-तीस वर्षों में बहरे मनुष्यों व बालकों की एक बहुत बड़ी संख्या नगरों-व महानगरों में खड़ी हो जाएगी। यद्यपि प्रदूषण नियंत्रण के कई कानून बने हैं पर कड़ाई से उनका पालन नहीं होता। आवश्यकता है कि सड़क के शोर से नागरिकों की रक्षा करने के लिए सरकार शीघ्र कड़े कदम उठाए। ज़ोर से बजते लाउडस्पीकर, रेडियो आदि का उपयोग कानून द्वारा नियंत्रित होना चाहिए। मोटर हॉनों के तेज़ बजाए जाने पर प्रतिबंध होना चाहिए।

पिछले कुछ वर्षों में शोर नियंत्रण के बारे में काफ़ी ज्ञान अर्जित किया गया है। अब कई व्यावसायिक संगठन और सरकार शोर नियंत्रण की तरफ़ जागरूक हो रहे है। कुछ ऐसे पेड़-पौधे भी है, जिनकी उपस्थिति से दस से पंद्रह डेसीबल शोर कम किया जा सकता है। ये पेड़ आम, इमली, नारियल, ताड़, नीम व युकेलिप्टस आदि हैं। अगर एक बार शोर की मात्रा निर्धारित हो जाती है तो उस नियम का पालन हो रहा है कि नहीं यह देखने हेतु ऐसे दल गठित किए जाने चाहिए जो उल्लंघन करने वालों को उनके द्वारा की गई क्षति के अनुपात में दंडित कराने में सहायक हों।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कठिन शब्दार्थ

तोहफ़ा - भेंट, gift / मापदंड - അളവുകോൽ, norm / सघन ध्वनि तरंग - dense sound waves / इकाई - unit / विश्व स्वास्थ्य संगठन - W.H.O. / संतुष्टि - happiness/क्षति - हानि / अल्पकालीन प्रभाव - short term effect / विभाव और प्रतिरोध - contact and resistance / संपर्क - contact / जनजाति - tribe / नस - nerve/ स्वर तंत्रिका - auditary nerve / कर्णावर्त तंत्रिका - typanic membrane / मानसिक तनाव - mental tension / चिड़चिड़ाहट - fret fulness / झुंझलाहट - bitterness/ स्नायुतंत्र - nervous system / पाचन तंत्र - digestive system / वाहिनियाँ का संकुचन - shrinking of blood vessels / सहनीय स्तर - endurable level / प्राच्छादन- खराब / अश्रवणीय - not audible / वांछित ध्वनि - desirable sound / वाग्ध्वनि - speech sound (vocal) / श्रवण ह्रास - hearing impair / श्रवण अवसीमा - hearing limit / श्रवण सामर्थ्य - hearing ability / श्रव्य श्रेणी - hearing range / अभ्यस्त - experienced / प्रभावन स्तर - influencing level / कल-कारख़ाने - machines and factories / औद्योगिक प्रगति - industrial progress / निर्धारित करना - निर्णय करना / औसत - average/ औसत स्तर - moderate (medium) level/ कांतिक बैंड - magnetic band / शोर की तीव्रता - density of sound / घातक - fatal/ कड़ाई से - strictly / तेज़ - loud

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्रसंग व्याख्या कीजिए

1) शांत स्थानों में रहनेवाली महिलाओं की तुलना में शोरगुल के लगातार संपर्क में रहनेवाली महिलाओं के नवजात शिशुओं में विकृतियाँ अधिक होती हैं।

2) उन्हें कभी न तो हृदय रोग होते हैं और न रक्तचाप का कष्ट। वहाँ काफ़ी बड़ी उम्र के लोग भी साफ़ सुनते हैं।

3) स्नायुतंत्र पर शोर का प्रभाव हृदय, पाचन तंत्र के साथ अन्य तंत्रों पर भी पड़ता है। साथ ही वाहिनियों के संकुचन से हृदय रोग तथा अन्य बीमारियाँ शरीर में डेरा डाल लेती है।

प्रश्न

1) शोर क्या है? उसका प्रभाव मानव-जीवन पर कैसे पड़ता है?

2) शोर से उत्पन्न समस्या का हल कैसे किया जा सकता है?

3) शोर प्रदूषण ज़हरीले रसायन से भी अधिक खतरनाक है। समझाइए।

4) ध्वनि प्रदूषण के कारणों पर विचार कीजिए?

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri